गहन आनन्द चिन्तन

प्रथम भाग

गहन आनन्द चिन्तन

प्रथम भाग

रामकृष्ण मठ एवं मिशन के चतुर्दश संघाध्यक्ष
परम पूज्यपाद श्रीमत् स्वामी गहनानन्दजी महाराज द्वारा
साधकों/भक्तों को जिज्ञासा समाधान में लिखे गये पत्रों
एवं वरिष्ठ संन्यासियों के संस्मरणों का संकलन

संकलन एवं परिकल्पना
स्वामी तत्परानन्द
रामकृष्ण मठ, बेलूड़ मठ, हावड़ा, पश्चिम बंगाल

रामकृष्ण आश्रम
रामकृष्ण आश्रम मार्ग, समीप होटल करणी भवन पैलेस,
करणीनगर, लालगढ़, बीकानेर ३३४००१ (राजस्थान)
दूरभाष 0151-2529429 मो. 09610449221
ईमेल rkabikaner@gmail.com

Gahan Anand Chintan (Hindi) 1st Part
Published by Ramakrishna Ashrama, Bikaner

प्रकाशक :-
अर्जुन सिंह, सचिव,
रामकृष्ण आश्रम, रामकृष्ण आश्रम मार्ग,
समीप होटल करणी भवन पैलेस, करणी नगर,
लालगढ़, बीकानेर ३३४००१ (राजस्थान)
दूरभाष 0151-2529429 मो. 09610449221
ई मेल : rkabikaner@gmail.com

सम्पादक मण्डल :-
स्वामी निखिलात्मानन्दजी महाराज, रामकृष्ण सेवाश्रम, वाराणसी,
स्वामी तत्परानन्दजी महाराज, बेलूड़ मठ, हावड़ा, श्री मोहन थानवी,
डॉ. गजेन्द्र सिंह मनोहर एवं ब्रह्मचारी निर्मल - रामकृष्ण आश्रम, बीकानेर

प्रथम संस्करण :- २२ मार्च २०१८

विपणन :-
श्रीरत्नेश्वर पुस्तक भण्डार, रतन बिहारी पार्क के सामने
के.ई.एम.रोड़, बीकानेर ३३४००१ (राजस्थान)
दूरभाष 0151-2549712, 09314439664, 09929182501
ई मेल : shriratneshwar@gmail.com

मुखपृष्ठ साज-सज्जा :-
श्री गौतम गुप्ता, सलाहकार एवं कलानिर्देशक
श्रीमती रुम्की गुप्ता, अध्यापिका, अभिनव भारती हाई स्कूल
हेमन्त अपार्टमेन्ट २६, ईस्टर्न पार्क, (रोड़), कोलकाता-७५
ई मेल : gg-rg@rediffmail.com मो. 09831333162

मुद्रक :-
Soumen Traders Syndicate
9/3, K P Coomar Street, Bally, Howarah-711201, W.B.
E-mail : stsbally@gmail.com

समर्पण मूल्य 600/-

अनुक्रमणिका

आशावाणी

'जिनका आखिरी जन्म है, उनको यहाँ आना ही होगा'

श्रीश्रीरामकृष्णः शरणम्।

रामकृष्ण मठ
बेलूड़ मठ, हावड़ा पश्चिम बंगाल - ७११२०२
गुरुपूर्णिमा, २००७

महामति व्यासदेव की आर्विभाव तिथि गुरुपूर्णिमा के रूप में मनाई जाती है। व्यासदेव के अन्तःकरण में प्रकाशित श्रीभगवान की गुरुशक्ति ने सर्वाधिक शक्तिशाली रूप में असंख्याधिक मनुष्यों को आध्यात्मिक मार्ग में प्रवर्तित कर दिया था जो कभी अन्य कोई मनुष्य शरीर में प्रकाशित गुरुशक्ति के माध्यम से नहीं हुआ था। इसीलिए व्यासदेव के प्रणाम मन्त्र में उनकी स्तुति करते हुए बोला जाता है कि :-

नमोस्तुते व्यास विशालबुद्धे
फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र।
येन त्वया भारततैलपूर्णः
प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः।।

अर्थात ज्ञान के आकार स्वरूप पाँचवे वेद महाभारत, अष्टादशपुराण इत्यादि बहु-ग्रन्थों की रचना कर अनगिनत मनुष्यों को जिन्होंने ज्ञानालोक से उद्भासित किया और आज भी करते जा रहे हैं, उनको हमारा नमस्कार।

अब प्रश्न उठता है कि व्यासदेव की जन्मतिथि पर उनकी ही पूजा की जानी चाहिये, किन्तु ऐसा तो नहीं होता है, सभी

अपने-अपने गुरुदेव की पूजा करते हैं। इसका उत्तर ऐसा है कि व्यक्ति रूप में व्यासदेव की जन्मतिथि को गुरुपूर्णिमा के दिन पालन नहीं किया जाता है अपितु उस तिथि पर जिस आलौकिक, ईश्वरीय गुरुशक्ति का प्रकाश लौकिक गुरु व्यासदेव में हुआ था उसकी पूजा सभी शिष्य अपने-अपने लौकिक-गुरु की पूजा-अर्चना के रूप में पालन करते हैं। एक ही गुरुशक्ति विभिन्न मानवीय गुरुमूर्तियों के रूप में प्रकटित होती है। जैसे एक ही आकाश है किन्तु जो घट में आकाश है वह घटाकाश के रूप में दिखाई पड़ता है या विभिन्न कक्षों में वही आकाश विभिन्न कक्षाकाशों के रूप में दिखाई पड़ता है, उसी रूप से एक ही गुरुशक्ति विभिन्न मानवीयरूपों में अभिव्यक्त होने के कारण भिन्न-भिन्न रूपों में मात्र प्रतीत होती दिखाई पड़ती है।

वस्तुतः श्रीभगवान ही प्रकृत गुरु होते हैं। वे मनुष्य रूपी गुरु के रूप में कार्य कर रहे हैं। मनुष्य रूपी गुरु शिष्य के कान में मन्त्र देते हैं। उसके पश्चात शुरू होती है जगदगुरु श्रीभगवान की लीला। और वे ही भक्त का हाथ पकड़ कर उन्नति पथ पर ले जाते हैं। मनुष्य-गुरु मन्त्र देते हैं कान में, और जगद्गुरु देते हैं प्राण में। गुरु प्रणाम के समय बोला जाता है :-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

ईश्वर रूपी श्रीगुरुदेव का यह माहात्म्य हम लोग भूल जाते हैं। इसीलिए हमारे शास्त्रों में इसी सत्य को स्मरण करवा देने के लिए वर्ष में यह एक दिन गुरुपूर्णिमा के नाम से निर्धारित किया गया है।

गुरुपूर्णिमा के इस पुण्य लग्न में श्रीभगवान के चरण कमलों में मेरी यही प्रार्थना है कि तुम्हारे हृदयकमल में उनकी गुरुशक्ति के प्रभाव से ज्ञान, भक्ति, वैराग्य इत्यादि सुन्दर-सुरभित पुष्प प्रस्फुटित हों, और इन्हीं पुष्पों के माध्यम से उनकी नित्य-पूजा से तुम

सभी उनकी ओर अग्रसर हो जाओ। वैदिक ऋषि भी प्रार्थना करते हैं:-

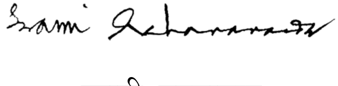
उपत्वाग्ने दिवेदिवे
दोषावस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि।।

{हे अग्निदेव ! हम (अनुष्ठान करने वाले) प्रत्येक रात और दिन में अपनी प्राप्त बुद्धि के अनुसार नमस्कार शब्द उच्चारण करते-करते तुम्हारे समीप उपस्थित होते हैं। अर्थात प्रत्येक सांय और प्रातःकाल अग्नि उपस्थान/हवन द्वारा तुम्हारी सेवा कर रहे हैं। यहाँ अग्नि को परमात्मा माना गया है।} -अग्निसूक्तम्।

श्रीभगवान अवश्य ही तुम सभी का मंगल करेंगे। वे ही तुम्हारा हाथ पकड़े हैं। कारण, उन्होंने स्वयं ही बोला है कि जिनका आखिरी जन्म है उनको यहाँ आना ही होगा। तुम लोग भी आस्था रखो, विश्वास करो। भगवान को मन-प्राण देकर पुकारो जैसे यही तुम्हारा अन्तिम जन्म हो। बस इतना ही करो। तुम लोग एक पैर आगे बढ़ोगे वे दस पैर तुम्हारी ओर आ जाएँगे। निश्चित ही जानो, तुम सभी को वे अपनी गोद में लेंगे ही लेंगे।

इति

शुभानुध्यायी



स्वामी गहनानन्द
अध्यक्ष

सम्पादकीय:-
इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में परम पूज्यपाद श्रीमत् स्वामी गहनानन्दजी महाराज के इस पत्र को बंगला से अनुवादित कर प्रकाशित किया जा रहा है जिसमें गुरुपूर्णिमा का महत्त्व समझाते हुए वे अपनी आशावाणी से सभी की आध्यात्मिक उन्नति हेतु प्रार्थना करते हैं।

प्रकाशकीय निवेदन

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।।

३४/४।।श्रीमद्भगवतगीता

तुम गुरु के पास जाकर सत्य को जानने का प्रयास करो। उनसे विनीत होकर जिज्ञासा करो और उनकी सेवा करो। स्वरूपसिद्ध व्यक्ति तुम्हें ज्ञान प्रदान कर सकते हैं, क्योंकि उन्होंने सत्य का दर्शन किया है।

श्रीमद्भगवतगीताके इस श्लोक को चरितार्थ करता हुआ यह ग्रन्थ आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के हाथों समर्पित करते हुए हमें अपार आनन्द का अनुभव हो रहा है।

रामकृष्ण मठ एवं मिशन के १४वें अध्यक्ष परम श्रद्धेय श्रीमत् स्वामी गहनानन्दजी महाराज की महासमाधि हुए अभी अधिक समय नहीं हुआ है। उनके द्वारा आध्यात्मिक जिज्ञासुओं की शंका-समाधान हेतु प्रत्युत्तर में भेजे गए पत्रों का संकलन **'गहन आनन्द चिन्तन'** शीर्षक से इन्टरनेट पर छवि-चल-चित्रों सहित हिन्दी, बंगला तथा अंग्रेजी भाषाओं में सर्वप्रथम स्वामी तत्परानन्दजी महाराज द्वारा उनके दिशा-निर्देशों में उनके सहयोगी, बैंगलुरू निवासी श्री सात्विक जोगलेकर, शिबपुर निवासी श्रीमती व्रजेश्वरी दीपा दे एवं अन्यान्य सहयोगियों द्वारा प्रकाशन आरम्भ किया गया था जो कि श्रीरामकृष्ण-विवेकानन्द भावधारा के अनुरागी संन्यासियों एवं भक्तों में ही नहीं अपितु विभिन्न साधक वर्गों में बहुत ही लोकप्रिय हो गया था। भक्तों का उनके पत्रों के प्रकाशन के बारे में जानने का इतना प्रबल आग्रह तथा उत्साह यही इंगित करता है कि इस संकलन से शान्ति एवं समाधान की प्राप्ति हो रही है। इसी हेतु यह प्रयास सर्वसाधारण के लिए समर्पित है।

परम श्रद्धेय श्रीमत् स्वामी गहनानन्दजी महाराज के मन्त्र-शिष्य एवं रामकृष्ण मिशन के संन्यासी स्वामी तत्परानन्दजी महाराज जब भी बीकानेर आते तो उनकी विभिन्न विषयों पर आश्रम में प्रवचन श्रृंखला आयोजित हुआ करती थी, जो कि भक्तों को बहुत ही प्रेरणा देती थी। वे रामकृष्ण मिशन के वरिष्ठ संन्यासियों एवं भक्तों से, अपने पूज्य गुरुदेव के प्राप्त पत्रों की फोटो प्रतियों का प्रायः सन्दर्भ दिया करते थे। सितम्बर २०१६ में स्वामी तत्परानन्दजी महाराज की लिखी एक संक्षिप्त पुस्तक **'हमारी सनातन उपासना पद्धति'** का बीकानेर आश्रम में पूज्य श्रीमत् स्वामी निखिलात्मानन्दजी महाराज ने विमोचन किया उस समय पूज्यपाद श्रीमत् स्वामी गहनानन्दजी महाराज के पत्रों के प्रकाशन की बात हुई। पूज्य स्वामी निखिलात्मानन्दजी महाराज ने परम श्रद्धेय श्रीमत् स्वामी गहनानन्दजी महाराज के उपलब्ध पत्रों की फोटो प्रतियों का गम्भीरतापूर्वक अवलोकन करके कहा कि यदि इसका पुस्तक के रूप में प्रकाशन होता है तो यह धर्म जीवन में उन्नति के लिए बहुत ही श्रेयस्कारी होगा। चूंकि रामकृष्ण आश्रम, बीकानेर रामकृष्ण विवेकानन्द भावधारा परिषद, बेलूड़ मठ से सम्बद्ध है अतः आश्रम के प्रन्यास मण्डल ने बेलुड़ मठ की स्वीकृति उपरान्त ही इस कार्य को कार्यान्वित करने का निश्चय किया। बेलुड़ मठ के तत्कालीन महासचिव श्रीमत् स्वामी सुहितानन्दजी महाराज से स्वामी तत्परानन्द जी महाराज द्वारा किए गए संकलन **'गहन आनन्द चिन्तन'** ग्रन्थ के प्रकाशन के प्रस्ताव के लिए स्वीकृति चाही। पूज्य महाराज ने सम्पूर्ण पाण्डुलिपि को देख कर कहा कि यह साधकों/भक्तों के लिए बड़ी ही उपादेय सिद्ध होगी और कहा कि इसका प्रकाशन, हिन्दी, अंग्रेजी तथा बंगला तीनों भाषाओं में किया जाये तो अच्छा रहेगा। इस हेतु श्रीमत् स्वामी बलभद्रानन्दजी महाराज, सहायक महासचिव, रामकृष्ण मठ एवं मिशन, बेलूड़ मठ का भी मागदर्शन हमारे लिए उपयोगी रहा।

प्रस्तुत पुस्तक में रामकृष्ण मठ एवं मिशन के १४वें अध्यक्ष पूज्य पाद श्रीमत् स्वामी गहनानन्दजी महाराज के ३७५ पत्रों को सम्मिलित किया गया है जिसमें एक संस्कृत भाषा एवं ३७४ पत्र हिन्दी भाषा के है अर्थात भक्त वर्षपर्यन्त प्रत्येक दिन एक पत्र का स्वाध्याय कर सकेंगे। अनेकानेक सम्भ्रान्त भक्तों व अनुरागियों ने स्वतःप्रेरित होकर पूज्यपाद महाराज के चित्र तथा स्मृतिकथाएँ दी हैं।उन सभी को कृतज्ञतापूर्वक धन्यवाद है। सभी के द्वारा भेजे गये स्मृतियाँ या चित्रों को प्रकाशित करना सम्भव नहीं हो सका। इसका तात्पर्य यह नहीं कि वे छपने के योग्य नहीं थे। इच्छा होते हुए भी ग्रन्थ के कलेवर में वृद्धि की आशंका से उन्हें लेना सम्भव नहीं हुआ। भविष्य में यदि सम्भव हुआ, तो उन्हें भी प्रकाशित किया जाएगा।

ब्रह्मलीन श्रीमत् स्वामी निखिलात्मानन्दजी महाराज, जो कि रामकृष्ण मिशन के वरिष्ठ संन्यासी थे और जो वाराणसी में रामकृष्ण अद्वैत आश्रम में विराजते थे, वर्ष १९९५ से ही वे रामकृष्ण आश्रम, बीकानेर के आधारभूत संरचना एवं गतिविधियों के मार्गदर्शक रहे है। यह अतिश्योक्ति भी नहीं है कि श्रीरामचरितमानस एवं श्रीमद्‌भगवदगीता के साथ-साथ श्रीरामकृष्ण विवेकानन्द भावधारा के प्रचार प्रसार हेतु उनका बीकानेर में सर्वाधिक प्रवास रहा है जो कि उनके प्रगाढ़ निश्चल स्नेह का परिचायक है और आश्रम के विकास में उनके किये गये अविस्मरणीय योगदान के लिए रामकृष्ण आश्रम सदैव कृतज्ञ रहेगा। पूज्य महाराजजी ने अपने जीवन काल में ही इन पत्रों को भाषा की दृष्टि से आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया था।

प्रकाशक के निवेदन में आभार की श्रृंखला में सर्वप्रथम रामकृष्ण मठ एवं मिशन के सभी पूज्यपाद महाराजगणों का हार्दिक आभार जिन्होंने अपने दैनन्दिन व्यस्तता के मध्य इस ग्रन्थ हेतु अपने शुभ आशीर्वचनों, सन्देशों एवं संस्मरणों से अनगिनत पाठक-वृन्दों को प्रोत्साहन देकर अनुग्रहित किया। उन सभी प्रातः स्मरणीय सन्तों को रामकृष्ण आश्रम, बीकानेर के भक्तों की ओर

से साष्टांग प्रणति। पूज्य स्वामी तत्परानन्दजी महाराज जो कि रामकृष्ण संघ में योगदान देने से पूर्व इस आश्रम के सदस्य एवं कार्यकर्ता भी रह चुके हैं, उन्होंने बड़ी ही श्रद्धा से इस ग्रन्थ के आद्योपरान्त संकलन से सम्पादन एवं लेखन से प्रकाशन तक अपने समय एवं सामर्थ्य अनुसार हर सम्भव प्रयत्न किए हैं साथ ही आवश्यकतानुसार बंगला एवं अंग्रजी के अधिकांश लेखों का हिन्दी में अनुवाद भी किया है, उनके प्रति हमारा सश्रद्धेय आभार। इसी पुनीत अवसर पर आश्रम परिवार अपने श्रद्धा-सुमन आश्रम की संस्थापिका एवं प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद श्रीमत् स्वामी रंगनाथानन्दजी महाराज की मन्त्र-शिष्या, रामकृष्ण लोकस्थ पूज्या माता पी० तन्कम्मा को भी अर्पित करते हैं, जिनके त्याग एवं तपस्या पूत दिव्य जीवन ने हम सभी को रामकृष्ण भावधारा के अनुगामी बनाने हेतु सुपात्र बनाया। राजस्थान की माननीया मुख्यमन्त्री श्रीमती वसुन्धरा राजे जी के प्रति भी हमारा साधुवाद, जिन्होंने व्यस्तता के बीच इस हेतु समय निकाला, यह उनके सात्त्विक व्यक्तित्व एवं सफल नेतृत्व का ही परिचायक है। बीकानेर राजमाता माननीया श्रीमती सुशीला कुमारी जी साहिबा जो कि आश्रम की प्रमुख प्रन्यासी भी हैं, का भी हम हार्दिक धन्यवाद एवं अभिनन्दन करते हैं, जिनके पुण्यों के फलस्वरूप आज बीकानेर के साधन भजन सत्संग प्रेमी सुधीजन रामकृष्ण आश्रम में पधारे महापुरूषों को अपने समक्ष पा कर सत्संग कर पा रहे हैं। उनके रामकृष्ण आश्रम के लिए प्रदत्त २.२१ एकड़ का भूखण्ड, आश्रम की भूमि पर पवित्र चिन्तन एवं दिव्य जीवनयापन की प्रेरणा अनेकानेक साधकों एवं प्रशंसकों को अक्षुण प्रेरणा देती रहेगी। कर्मठ किन्तु ममतामयी श्रीमती पद्मादेवी खत्री जो कि पूज्य स्वामी तत्परानन्दजी महाराज की माता होने का गौरव रखती हैं, उनका राजस्थानी भाषा में संदेश एवं आशीर्वाद भी हमारे लिए पुण्यदायी है, उनका भी सश्रद्धेय आभार।

श्रीरत्नेश्वर पुस्तक भण्डार, के.ई.एम रोड़, बीकानेर के भी हम आभारी हैं जिन्होंने प्रेमपूर्वक इस पुस्तक के विपणन का भार उठाया है। सोमेन ट्रेडर्स सिण्डीकेट, बाली, हावड़ा के श्री हीरक दास एवं श्री सोमेन दास महाशय और उनके सहकर्मियों ने पूरे हृदय से सभी प्रकार से हमारे साथ सहयोग किया है, उसके लिए हम इन सबके प्रति कृतज्ञ हैं। सुन्दर मुख्य पृष्ठ की सजावट के लिए कोलकता निवासी श्रीमान गौतम गुप्ता, कला निर्देशक एवं सलाहकार तथा उनकी धर्म पत्नी वात्सल्या मूर्ति श्रीमती रूम्की गुप्ता, वरिष्ठ अध्यापिका के भी हम आभारी हैं जिन्होंने अपने व्यस्तम समय में समय निकाल कर सुन्दर मुख पृष्ठ बनाया। सम्पूर्ण ग्रन्थ के प्रूफ-संशोधन एवं टंकण आदि में श्री मोहन थानवी, डा० गजेन्द्र सिंह मनोहर तथा ब्रह्मचारी निर्मल के अथक प्रयत्न से विशेष सहायता मिली है, उनको भी हमारा विशेष आभार।

ग्रन्थ के प्रकाशन के लिए स्वामी तत्परानन्दजी महाराज की प्रेरणा से पूज्यपाद श्रीमत् स्वामी गहनानन्दजी महाराज के शिष्यों एवं प्रशंसकों ने उदारतापूर्वक वित्तीय सहायता प्रदान कर प्रकाशन में सहयोग प्रदान किया है हम उन सब के लिए भी हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। इतना होते हुए भी ग्रन्थ की लागत एवं सभी खर्च मिलाने पर इसका मूल्य कुछ अधिक ही लगता है लेकिन इसमें स्वाध्याय-सत्संग सुधीजन प्रेमी पाठकों से अपेक्षा है कि वे हमारी विवशता को उदात्त हृदय से क्षमा करेंगे।

जैसे देवपूजा हेतु चन्दन घिसने वाले को अयाचित भाव से ही शीतलता तथा सुगन्ध मिलती है और पुष्प चयन करने वाले का मन-प्राण अनजाने में ही प्रफुल्लित एवं सुवासित होते रहते हैं, वैसे ही इस ग्रन्थ के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कार्य करने वालों को अज्ञात रूप से ही बहुत कुछ उपलब्धि हो चुकी है ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है। सभी के कल्याण की कामना की प्रार्थना के साथ,

सचिव
अर्जुन सिंह

श्रीरामकृष्णजयन्ती, २०१८
बीकानेर

संकलक की कलम से

श्रीश्रीगुरुदेव के पावन चरणों में श्रद्धा अर्घ्य स्वरूप यह संकलन समर्पित करते हुए मुझे उनकी अपार कृपा का अनुभव हो रहा है।

ईश्वर की कृपावश जब आध्यात्मिक यात्रा का श्रीगणेश होता है तब साधक अपनी उन्नति हेतु एक सफल मार्गदर्शन के लिए लालायित हो उठता है। अपने आस-पास के रीतिरिवाजों से, पुस्तकों से, बुद्धिजीवियों से एवं तथाकथित जो भी समाज द्वारा सर्वोच्च आध्यात्मिक सिंहासन पर स्वीकार किये गये संत एवं महानुभाव हैं, उन सभी के पास जाकर अपनी जिज्ञासा की शान्ति का प्रयास करता है। ऐसे में साधकों का अनुभव रहा है कि साधनामय जीवन में होने वाले उत्थान-पतन की जानकारी एवं स्वयं के जीवन में ईश्वरीय भावों को अनुभव एवं आविर्भाव करने में किसी सफल मार्गदर्शक की अनवरत शिक्षा-दीक्षा, जीवन के बहुमूल्य समय एवं क्षमताओं को व्यर्थ ही नष्ट होने से बचा लेती है। इस हेतु भगवान श्रीरामकृष्णदेव, श्रीश्रीमाँ सारदादेवी, विश्वविख्यात स्वामी विवेकानन्द और उनके गुरु भाइयों एवं भक्तों के जीवन-चरित्र साधकों को मार्गदर्शन प्रदान करने में पर्याप्त हैं। पावन त्रिदेवों के सान्निध्य में आए साधकगण अपने जीवन के चरम लक्ष्य 'ईश्वर दर्शन की प्राप्ति' कर धन्य हुए। नारद भक्ति सूत्र में ऋषि नारद कहते हैं कि 'स तरति स तरति स लोकांस्तारति', जिसका भावार्थ है कि - वह व्यक्ति स्वयं पूर्णता को प्राप्त कर संसार सागर से तर जाता है और उसके सान्निध्य में आने वाले इच्छुक साधकों को भी वह तार देता है।' ऐसा ही रामकृष्ण मठ एवं मिशन की गुरु परम्परा में चला आ रहा है। युगावतार भगवान श्रीरामकृष्णदेव के प्रतिनिधि स्वरूप श्रीरामकृष्ण संघ के संघाध्यक्ष एवं सह-संघाध्यक्ष ईश्वर के एक सर्वश्रेष्ठ यन्त्र

के रूप में इच्छुक सभी धर्माभिलाषियों का मार्गदर्शन करते हैं। जो भक्तगण इस प्रकार साधना हेतु उनका शिष्यत्व ग्रहण कर कृपा-लाभ करते हैं, वे अपने श्रीगुरुदेव के प्रति इष्ट बुद्धि रख कर ही अध्यात्म मार्ग में आगे बढ़ते हैं। इसी कड़ी में हम चतुर्दश संघाध्यक्ष के रूप में परम पूज्यपाद श्रीमत स्वामी गहनानन्दजी महाराज को पाते हैं। श्रीरामकृष्ण भावधारा से अनुप्राणित भक्तजन निश्चित रूप से मन्त्र-दीक्षा लेते हैं और अपने श्रीगुरुदेव की सेवा और सुश्रुषा से प्राप्त उपदेशों का तत्परता से अनुसरण करना, इष्ट दर्शन में एक सेतु का कार्य करता है। किन्तु ऐसा सौभाग्य तो सभी दीक्षित शिष्यों को नहीं मिलता और बहुत से शिष्य अपने श्रीगुरु की व्यक्तिगत सेवा-सुश्रुषा एवं सान्निध्य से वंचित रह जाते हैं। इसी कमी को दूर करने हेतु बहुत से साधकगण पत्र लिख कर उनके उत्तर पाकर उपदेशों का अनुसरण करते हैं। ऐसे ही पत्रों के उत्तर पूज्य महाराजजी बड़े ही सारगर्भित, सरल एवं संक्षिप्त तरीके से देते रहे जो कि साधकों के जीवन की प्रस्तुति के अनुसार सहज एवं बोधगम्य हैं। इन्हीं लिखित पत्रों के माध्यम से उनके एक महान जीवन की झलक भी मिलती है साथ ही उनके सान्निध्य में आने वालों को महान जीवन बनाने की उनकी अदभुत क्षमता का भी प्रकाश मिलता है। कुछ इन्हीं विचारों से ओतप्रोत धर्म और आध्यात्मिक साधना सम्बन्धी यह संकलन कार्य बड़ी ही श्रद्धा से रामकृष्ण मठ एव मिशन के वरिष्ठ संन्यासियों के स्नेहाशीर्वाद एवं भक्तों और मित्रों के अथक प्रयत्नों से प्रकाशित हो पा रहा है।

संकलन का अभ्यास रहने के कारण ईस्वी सन् २००० से ही यह कार्य आरम्भ हुआ था तब ऐसे किसी महती प्रकाशन का स्वरूप भी संकल्पित नहीं था। श्रीगुरुदेव अपने पत्रों के माध्यम से दीक्षित भक्तों एवं संन्यासियों का जो उपदेश देते रहते थे उनसे साधकों के आध्यात्मिक जीवन में लाभ होगा, इसी विचार से, क्रियान्वयन का शुभ संकल्प उनकी ही कृपा से स्वयं के स्वाध्याय

हेतु आरम्भ किया गया था और इस कार्य में उतनी आसानी भी न थी पर उन्हीं की कृपा से उन सभी स्थानों का सन्धान होता गया जहाँ से उनके पत्र रूपी उपदेशों का अमूल्य कोष प्राप्त होता चला गया। विशेषता यह रही कि हिन्दी भाषी शिष्यों को प्रेषित ये पत्र हिन्दी में ही थे और श्रीगुरुदेव द्वारा हस्ताक्षरित भी थे जिनको वे हिन्दी भाषा जानने वाले अपने संन्यासी एवं ब्रह्मचारी सेवकों से लिखवाया करते थे, और उन्हें प्रेषित करने से पूर्व सुन भी लिया करते थे। ऐसा ही वे अन्य प्रान्तों में अपने विभिन्न भाषा-भाषी शिष्यों को उनकी ही सहज बोधगम्य भाषा में प्राप्त पत्रों के उत्तर लिखवाते और डाक में डालने से पूर्व सुनकर ही हस्ताक्षर करते थे।

इस विराट कोष को किस नाम से पुकारा जाय यह बहुत दिनों से मन्थन चलता रहा पर श्रीगुरुकृपा से 'गहन-आनन्द-चिन्तन' यह नाम एक विद्युतीय विचार के रूप में आया और स्थायी हो गया और संयोगवश उस दिन महाष्टमी के पर्व पर ढाक और बाजे के बीच यह नामकरण उनके इसी शुभ जन्मदिवस पर उनके आदेश के रूप में ही शिरोधार्य हुआ। आधुनिक तकनीकी युग में प्रचलित विभिन्न संचार माध्यमों में इन्टरनेट पर जब इसका प्रकाशन शुरू हुआ तो सभी ने इसे बहुत सराहा और पुस्तक का रूप देने हेतु प्रेरित किया। इस पुस्तक के प्रकाशन हेतु जब वर्तमान सह-संघाध्यक्ष परम पूज्यपाद श्रीमत स्वामी सुहितानन्दजी महाराज, जो उस समय रामकृष्ण मठ एवं मिशन के महासचिव के पद पर सुशोभित थे, को पाण्डुलिपि दिखाई तो वे अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने स्नेहाशीर्वाद सहित इस कार्य हेतु लिखित स्वीकृति प्रदान की और साथ ही प्रकाशक के रूप में रामकृष्ण आश्रम, बीकानेर को भी रामकृष्ण मठ एवं मिशन से लिखित रूप में अनुमति प्रदान कर साधकों के समक्ष इस परिश्रम साध्य कार्य को पुस्तक रूप में लाने के कार्य का श्री गणेश किया, जो सह महासचिव परम पूज्यपाद श्रीमत् स्वामी बलभद्रानन्दजी महाराज के

मार्गदर्शन में प्रारम्भ हुआ। इस साधकोपयोगी ग्रन्थ के मुख्य पृष्ठ का चयन एवं अनावरण भी बेलूड़ मठ स्थित अपने आवास में ३१ जनवरी २०१८ को 'स्वामी अदभुतानन्द जयन्ती' के पावन दिवस पर सहर्ष पूज्यपाद स्वामी सुहितानन्दजी महाराज ने कर अनुग्रहित किया और उनके ही पवित्र कर-कमलों से इस ग्रन्थ का विमोचन भी २२ मार्च २०१८, गुरुवार को रामकृष्ण आश्रम, बीकानेर में होना निर्धारित हुआ है, जो कि दैवयोग से सभी के लिए अवश्य ही कल्याणकारी होगा।

इस पुनीत कार्य में रामकृष्ण संघ के वरिष्ठ संन्यासियों का स्नेहाशीर्वाद एवं बहुमूल्य मार्गदर्शन भी समय समय पर मिलता रहा जिसमें प्रमुखतः पूज्यपाद स्वामी निश्चलानन्दजी महाराज, स्वामी आत्मनिष्ठानन्दजी महाराज, स्वामी व्योमात्मानन्दजी महाराज, स्वामी निष्ठानन्दजी महाराज एवं दिल्ली निवासी मातृ स्नेह वत्सला श्रीमती सुपर्णा बोस का सहयोग चिरस्मरणीय बना रहेगा, जिनके सहयोग के बिना इस ग्रन्थ की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, जिसके लिये साधक वर्ग सदैव उनका ऋणी है, साथ ही पूज्य संन्यासियों एवं प्रेमी भक्तों ने अपनी-अपनी क्षमतानुसार वित्तीय सहायता प्रदान कर इसके प्रकाशन हेतु सुविधा प्रदान कर इस पुण्य कार्य में अपनी सहभागिता का अर्ध्य प्रदान किया है। उन सभी को साधुवाद। उल्लेखनीय है कि ब्रह्मलीन पूज्यपाद स्वामी निखिलात्मानन्द जी महाराज की हार्दिक इच्छा थी कि इस कार्य को वे ग्रन्थाकार में प्रत्यक्ष कर सके, उन्होंने कृपा पूर्वक इसका सम्पादन कार्य भी किया किन्तु स्वास्थ्य अच्छा न रह सकने के कारण चिकित्सा हेतु वे वाराणसी सेवाश्रम अस्पताल में भर्ती हुए और वही उन्हें काशी-मुक्ति प्राप्त हुई। उनके प्रयाण से पूर्व उनसे मिलने वाराणसी जाना हुआ जहाँ उन्होंने इस कार्य को पूर्ण करने हेतु दिशा-निर्देश प्रदान किए जिसे हिन्दी भाषा के मनीषी श्री मोहन थानवीजी, स्वतन्त्र पत्रकार/साहित्यकार ने अथक प्रयास कर अति शीघ्र सम्पन्न कर श्रीगुरु चरणों में समर्पित किया। इस ग्रन्थ

के द्वितीय भाग हेतु कार्य चल रहा है और आगामी वर्षों में बंगला एवं अंग्रेजी भाषाओं में रूपान्तरण भी पाठकों की सुविधा हेतु पूज्य स्वामी देवराजानन्दजी महाराज, बेलूड़ मठ, श्री सुबेन्दु मुखर्जी, अध्यक्ष, रामकृष्ण आश्रम, रायगंज, श्री सौमिक राहा, सुश्री सर्वाणी देब, श्रीमति काकोली सोम, पश्चिम बंगाल, श्रीमति चिन्मयी सेनगुप्ता, श्रीमति देबांजली गुहा बिस्वास, श्रीमति रत्नाश्री चौधरी एवं श्री नीलोत्पल चौधरी-दिल्ली, श्री अर्जुन सिंह, सचिव, रामकृष्ण आश्रम, बीकानेर, डॉ. श्री गजेन्द्र सिंह मनोहर एवं ब्रह्मचारी निर्मल, बीकानेर, श्री सात्विक जोगलेकर- बैंगलुरू, श्रीमति देबांजलि सेन, पुणे एवं अन्य बंगला और अंग्रेजी भाषा में साहित्यिक प्रवृति के संन्यासी एवं भक्तगण अपनी सेवाएं देने में अनवरत लगे हैं। उनके प्रति भी हमारा हार्दिक आभार।

आशा है साधन-भजन, स्वाध्याय, जप-ध्यान, ईश्वरप्रणिधान इत्यादि में उत्साह एवं दृढ़ता हेतु गति प्रदान करने में यह ग्रन्थ निश्चित रूप से सभी धर्मपिपासुओं के साधन-पथ में विशेष सहायक होगा। रामकृष्ण मठ में नित्य प्रति गाये जाने वाले स्तोत्रों के समावेश के साथ-साथ पूज्य श्रीगुरुदेव के विभिन्न छवि चित्रों का भी समावेश किया गया है, जिसे संन्यासियों के संग्रहों से और श्री अतुन बैनर्जी, वरिष्ठ फोटोग्राफर, वर्तमान पत्रिका से भी साभार संग्रहित हुआ है, जिससे पाठक रामकृष्णमय महान दिव्य विभूति का रूप-गुण-ध्यान-चिन्तन भी पठन के समय कर सकेंगे। पत्रों में व्यक्तिगत नामों एवं पतों को पत्र-प्राप्तकर्ता की गोपनियता को बनाए रखने के लिए हटा दिया गया है। अनेक पत्र बहुत ही विषण्ण अवस्था में प्राप्त हुए थे जिन पर लिखित दिनांक स्पष्ट नहीं रहने पर उस ओर गवेषणा नहीं की गई है। जैसे-जैसे ये पत्र प्राप्त होते गये उन्हें उसी अनुसार संख्या दे कर प्रकाशित किया गया है जिसका कारण यही कहा जा सकता है कि साधक को अपनी साधना हेतु मात्र गुरुदेव के उपदेश ही शिरोधार्य करने होते हैं न कि उनकी दिनांक क्योंकि यही माना जाता है कि श्रीगुरु

रूप में परमात्मा वर्तमान, भूत एवं भविष्य से परे अनवरत पाप-ताप-दग्ध जीवों के कल्याण के लिए कार्य कर रहे हैं।

पूज्य स्वामी गहनानन्दजी महाराज पर दो छविचित्रों के एलबम और तीन ग्रन्थ जो उनके जीवन एवं चरित्र पर प्रकाश डालते हैं, आध्यात्मिक पिपासुओं के लिए अमृत के समान है किन्तु उनकी भाषा का माध्यम बंगला एवं अंग्रेजी होने के कारण हिन्दी भाषी आध्यात्मिक पिपासुओं के लिए बड़े समय से अनुवादित ग्रन्थ की मांग की जाती रही है। इस हेतु उनके सम्पादक पूज्य स्वामी चैतन्यानन्दजी महाराज एवं पूज्य स्वामी आत्मनिष्ठानन्दजी महाराज ने भी व्यक्तिगत स्तर पर बंगला से हिन्दी में अनुवाद कार्य हेतु अनेकों बार मुझे उत्साह एवं मार्गदर्शन प्रदान किया, उन्हें मेरा सश्रद्धेय प्रणाम। उन्हीं की प्रेरणा से बंगला ग्रन्थ 'स्वामी गहनानन्द - एक उत्सर्गित जीवन' से कुछ लेखों का हिन्दी में अनुवाद कर यहाँ यथास्थान समावेश किया गया है। जिसमें पूज्य स्वामी विरजानन्दजी के पत्र एवं कुछ संस्मरण लेखों के हिन्दी में प्रकाशन हेतु श्री पार्थ कुमार दास से जो कि 'स्वामी गहनानन्द - एक उत्सर्गित जीवन' बंगला संस्करण के प्रकाशक हैं की मौखिक अनुमति प्राप्त की गयी। आशा है पाठकों के लिए चतुर्दश संघाध्यक्ष के तपोमय जीवन एवं उपदेशों की एकरूपता को समझने में आसानी रहेगी।

रामकृष्ण मठ एवं मिशन की परम्परा के अनुसार सदस्य ब्रह्मचारियों एवं संन्यासियों के स्थानान्तरण विभिन्न केन्द्रों में होते रहते हैं और मेरा भी विभिन्न केन्द्रों में सेवायज्ञों में योगदान करने का सौभाग्य रहा, इससे इस कार्य में कोई अवरोध हुआ हो जैसी कोई परिस्थिति उत्पन्न नहीं हुई अपितु वरिष्ठ संन्यासियों के संग लाभ से और विभिन्न दायित्वों के साथ-साथ और अधिक परिश्रम करने का उत्साह मिलता रहा, इस कड़ी में मेरा दिल्ली, नरोत्तम नगर, आलो, सेवा प्रतिष्ठान-कोलकाता एवं नारायणपुर केन्द्रों के शीर्षस्थ संन्यासियों जिनमें क्रमशः ब्रह्मलीन पूज्य स्वामी

गोकुलानन्दजी, स्वामी शान्तात्मानन्दजी, स्वामी ईशात्मानन्दजी, स्वामी गीतात्मानन्दजी, स्वामी वशिष्ठानन्दजी, स्वामी पूर्णज्ञानानन्दजी, स्वामी सत्यदेवानन्दजी, स्वामी नित्यकामानन्दजी, स्वामी व्याप्तानन्दजी एवं भाई स्वामी चनद्रकान्तानन्दजी, स्वामी दयापूर्णानन्दजी, स्वामी ब्रह्मयोगानन्दजी, स्वामी व्रजमोहनानन्दजी, स्वामी व्रजेश्वरानन्दजी, स्वामी कृष्णमृतानन्दजी और अन्य सभी अन्तेवासी संन्यासियों के प्रति भी प्रणति जिनके प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग से यह कार्य, प्रकाशन के स्तर तक पहुँच सका। विवेकानन्द विद्यापीठ, नारायणपुर में कार्यरत रहने की समयान्तराल में वहाँ के विज्ञ शिक्षक वृन्द के सहयोग हेतु भी मेरा साधुवाद। पश्चिम बंगाल के सम्मानीय राज्यपाल श्री केसरी नाथ त्रिपाठी जी का हार्दिक साभार, जिन्होंने अपने व्यस्ततम समय में प्रस्तुत संकलन का अवलोकन किया एवं सराहा, पुस्तक छपाई का कार्य शुरू हो चुका था तथापि उन्होंने अपने कार्यालय में इस हेतु अपनी शुभकामनाऐं साझा कीं।

यहाँ रामकृष्ण आश्रम, बीकानेर के सदस्यों का जितना भी आभार प्रकट किया जाए कम ही रहेगा, सर्वश्री अर्जुन सिंह, कैलाश सिंह, डॉ. गजेन्द्र सिंह मनोहर, राजाराम पाण्डे, भास्कर देब बर्मन, शंकर सिंह राजपुरोहित, सुरेन्द्र कुमार राजपुरोहित एवं ब्रह्मचारी निर्मल जिन्होंने अपने दैनन्दिन कार्यों में व्यस्तता के बीच समय निकाल कर श्रद्धापूर्वक टंकण, संशोधन एवं साज-सज्जा इत्यादि कार्यों को समय पर पूर्ण किया। अन्यान्य सभी प्रत्यक्ष/ अप्रत्यक्ष सहयोगकर्ताओं का भी सहस्त्र आभार।

संकलक का साधकों के समक्ष अवश्य ही यह निवेदन रहता है कि इस ग्रन्थ के स्वाध्याय से उत्पन्न होने वाले अपने बहुमूल्य विचार, भाषा इत्यादि त्रुटियों की जानकारी एवं इसी प्रकार की सामग्री अर्थात पूज्य महाराजजी के पत्र एवं संस्मरण किसी भी भाषा में प्राप्त होने पर प्रकाशक को अवश्य सूचित एवं प्रेषित करें, जिसे भविष्य में आने वाले लेखों, ग्रन्थों आदि में सुविधानुसार प्रकाशित किया जा सकेगा।

अन्त में यही आत्म-समर्पण करना श्रेष्ठ लगता है कि एक संकलक के रूप में यात्रा आरम्भ हुई, किन्तु श्रीगुरुकृपा से इस महती ग्रन्थ के सम्पादन जैसे गुरुत्वपूर्ण दायित्व का भी निर्वाह करना पड़ा जिससे मैं पूर्णतया अनभिज्ञ हूँ, अवश्य ही इस कार्य में श्रीगुरुदेव के अदृश्य अनवरत मार्गदर्शन एवं उनकी सतत उपस्थिति का अनुभव स्फूर्ति एवं आनन्द देता रहा फिर भी इस अकिंचन की चित्तशुद्धि हेतु प्रार्थनाएं सभी पाठकों/साधकों से अपेक्षित है।

श्रीगुरु चरणाश्रित

स्वामी तत्परानन्द

रामकृष्ण मठ, बेलूड़ मठ, हावड़ा

भगवान श्रीरामकृष्णदेव की १८३वीं जयन्ती

१७ फरवरी, २०१८

प्रथम पाठक की कलम से

प्रभु इच्छा से पूज्यपाद स्वामी गहनानन्दजी महाराज के आशीर्वचनों को मुझ मंदबुद्धि को आत्मसात करने का सुअवसर उनके पत्रों के प्रकाशित होने पर प्रथम पाठक के रूप में प्राप्त कर मैं धन्य हुआ। मेरा अहोभाग्य कि इन पत्रों को पुस्तकाकार प्राप्त हो, उससे पूर्व मेरे ज्ञानचक्षु तृप्त हुए। इन पत्रों को पुस्तक रूप में श्रद्धालुओं के सम्मुख लाने का विचार मात्र ही रोमांच पैदा करता है। इस विचार के विचारक पूज्यपाद स्वामी गहनानन्दजी महाराज को हृदय से उनके श्रीचरणकमलों में सश्रद्धा पूर्ण प्रशस्ति कि उनके परिश्रम का लाभ हम समस्त मानव उठाने को चिन्हित हुए। मुझे इन पत्रों को पढ़ते समय जो अनुभूति हुई वह अवर्णनीय है। पूज्यपाद स्वामी गहनानन्द जी के हर एक अक्षर में ज्ञान-पुँज प्रस्फुटित होता है। अनुभूत करने वाला मैं अज्ञानी यह किस प्रकार सम्प्रेषित करूं कि पूज्यपाद स्वामी गहनानन्दजी के ये पत्र मात्र पाने वाले/वाली के निमित्त ही नहीं वरन् इस संसार में हम जैसे प्रत्येक ज्ञान-पिपासु के लिए महत्त्वपूर्ण हैं जो कि अपने जीवन में शान्ति तलाशते हैं। मोक्ष प्राप्ति के यत्न करते हैं। महाराज जी के पत्रों को पढ़ते समय उनके अपार ज्ञान की अमृत-बूंदे तो हृदय को पवित्र करती ही हैं, साथ ही साथ उनकी व्यस्तता को अनायास ही प्रकट भी करते हुए हमारे सम्मुख जीवन के एक-एक क्षण का सदुपयोग करने की प्रेरणा भी देती है। महाराज जी ने अपने दीक्षित भक्तों एवं श्रद्धालुओं और जीवन का सार तलाशने वाले ज्ञान-पिपासुओं को अपने पत्रों में उन्हीं की आवश्यकता के अनुसार ऐसे-ऐसे उदाहरण दिये हैं जो कि विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रयुक्त किये जाने भी मुश्किल लगते हैं, किन्तु पूज्य महाराज जी ने ऐसी सहजता से इस चराचर जगत के प्रत्येक क्षेत्र से जुड़े उदाहरण प्रस्तुत किए हैं कि लगता है पूज्य महाराजजी ने तमाम

क्षेत्रों/विषयों को अनुभूत किया हुआ है। जैसे कि स्पष्टवादिता पत्रांक ३०३ पत्र प्राप्ति-उत्तर लेखन प्रक्रिया में स्पष्ट बताई है। निर्धारित लक्ष्य के सिवाय पूज्यपाद स्वामी गहनानन्दजी महाराज ने कहीं भी विषयान्तर नहीं किया है। सोदाहरण प्रत्येक बात को सरल तरीके से समझाया है। संसार-माया-मोह, अध्यात्म-धर्म-कर्त्तव्य, दायित्व-भेद, मन की इच्छा, नैतिकता और नीतिगत बातों को पत्रों में उल्लेखित किया है। धैर्यता-उग्रता-क्रोध-रोष-आक्रोश आदि जीवन के रंगों से एकमेव होते हुए भी निरपेक्ष रहने का सन्देश दिया है।

शिक्षा का महत्त्व, नारी-पुरूष भेद व समानाधिकार की बातें ऐसे कही हैं कि सीधे हृदय में उतरती हैं। अपराध बोध और आपराधिक कृत्य के भेद बताते हुए नैतिक जीवन जीने के लिए कहा है। सामाजिक संस्कार-वाकपटुता, श्रवणनियमों को उपदेश में नहीं वरन् जिज्ञासु की ही शैली में कहा है। पारिवारिक-संन्यासी जीवन की सूक्ष्म बातें भी बताई हैं। इन पत्रों की हर पंक्ति शब्द विन्यास-अर्थ (प्र+योजन) जैसे सरस्वती माता के प्रसाद से पूर्ण हैं। धनराशि ड्राफ्ट लेन देन पावती को व्यवहार कुशलता के साथ समाहित करते हुए पत्रों का आकार लघु रखा है। हाँ, पत्र संख्या ३६० अपेक्षाकृत अन्य के आकार में बड़ा जरूर महसूस होता है।

पूज्यपाद श्रीमत् स्वामी गहनानन्दजी महाराज के पत्र संयोजित कर पाठकों तक पहुँचाने के महती कार्य के लिए स्वामी तत्परानन्दजी महाराज को हार्दिक प्रणाम एवं यह अपेक्षा भी कि निकट भविष्य में ऐसे हीरे-मोती-माणिक्य आपके निमित्त हमें भी प्राप्त होते रहेंगे। अज्ञानवश किसी भी तरह की त्रृटि, भूल चूक के लिए अग्रिम क्षमायाचना सहित,

क्षमा प्रार्थी

मोहन थानवी

स्वतन्त्र पत्रकार/साहित्यकार

८२, सादुल कॉलोनी, बीकानेर मो०९४६०००१२५५

Email: mohanthanvi@gmail.com

२६ अगस्त, २०१७



आशीर्वाणी

एवं

शुभकामना–संदेश

Phone PBX:
(033) 2654-1144 / 1180
FAX: (033) 2654-4346
Email: mail@belurmath.org
Website: www.belurmath.org

RAMAKRISHNA MATH
(The Headquarters)
P.O. BELUR MATH, DIST. HOWRAH
WEST BENGAL : 711202
INDIA



२२/२/२०१८

स्नेहभाजन श्री सिंह,

शुभ आशीर्वाद।

मैंने तुम्हारे बहुत सारे पत्र पाए जिसमें तुमने पूज्यपाद श्रीमत् स्वामी गहनानन्दजी, चतुर्दश संघ अध्यक्ष, द्वारा भक्तों को लिखे गए पत्र को संकलित कर उन्हें रामकृष्ण आश्रम, बीकानेर से प्रकाशित करने का उल्लेख किया है।

मैं आशा करता हूँ कि यह संकलन भक्तों को धर्म मार्ग में अग्रसर होने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

इस संकलन की सफलता के लिए ढेर सारी शुभकामना सहित,

प्रभु सेवारत
स्वामी स्मरणानन्द
(स्वामी स्मरणानन्द)
अध्यक्ष

श्री अर्जुन सिंह
सचिव, रामकृष्ण आश्रम
रामकृष्ण आश्रम रोड
(नियर होटेल कर्णी भवन प्लेस)
कर्णीनगर, लालगढ़
बीकानेर, राजस्थान ३३४००१

Sri Ramakrishna Math

31 Ramakrishna Math Road
Mylapore, Chennai-600 004
✆ : 24621110 (4 Lines); Fax: 24934589
email: mail@chennaimath.org
website: www.chennaimath.org



BENEDICTION

I am glad to learn that Ramakrishna Ashrama, Bikaner is publishing a book 'GAHAN-ANAND-CHINTAN'. The 1st part of the Book is a compilation of letters (replies) of Most Revered Swami Gahananandaji Maharaj, the 14th President of Ramakrishna Math and Ramakrishna Mission, to the disciples.

The letters are compiled by Swami Tatparananda of Ramakrishna Mission, Narainpur and contain spiritual treasures which will greatly benefit the readers in their spiritual journey.

I am also glad to know that the Book is being brought out in 3 languages and that the original Hindi version is ready for publication. The English and Bengali versions will be published in due course. These Publications will greatly benefit not only the disciples of Revered Swami Gahananandaji Maharaj but also all the devotees of Bhagavan Sri Ramakrishna.

I deeply appreciate the efforts put in by the Bikaner Ramakrishna Ashrama and earnestly invoke the blessings of Bhagavan Sri Ramakrishna, Holy Mother Sri Sarada Devi and Swami Vivekananda on all those connected with the publication of the Book.

Swami Gautamananda

(Swami Gautamananda)
Adhyaksha

Swami Vijnanananda Jayanti,
Friday, 3rd Nov. 2017.

To
Sri Arjun Singh
Secretary
Ramakrishna Ashrama
Ramakrishna Ashrama Marg,
Near Hotel Karni Bhawan Palace
Karninagar, Lalgarh
Bikaner 334001 Rajasthan

Phone : (033) 2320-2927/6000
Email : rkmyogodyan@gmail.com
Website : www.yogodyan.org

RAMAKRISHNA MATH (YOGODYAN)
*(A branch centre of Ramakrishna Math, Belur
P.O. - Belur Math-711202, Dist. : Howrah, W.B.)*
7, YOGODYAN LANE, KANKURGACHHI
KOLKATA-700 054



८ फरवरी २०१८

प्रिय श्री अर्जुन सिंह,

रामकृष्ण आश्रम, बीकानेर पूज्यपाद श्रीमत् स्वामी गहनानन्दजी महाराज, रामकृष्ण मठ एवं मिशन के चर्तुदश संघाध्यक्ष पर उनके स्मरणार्थ 'गहन-आनन्द-चिन्न' ग्रन्थ का प्रकाशन करने जा रहा है। ऐसा जानकर मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है। इस कार्य की सफलता हेतु मेरी शुभकामनाएँ।

जैसा कि सर्वविदित है, यक्ष रूपी धर्म देवता जब ज्येष्ठ पाण्डव युधिष्ठिर को पूछते है - **कः पन्थाः ?**

अर्थात कौनसा पन्थ अनुकरण योग्य है ? युधिष्ठिर उत्तर देते है -

तर्कोऽप्रतिष्ठः श्रुत्रयो विभिन्ना नैको ऋषिर्यस्य मतं प्रमाणम्।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां महाजनो येन गतः स पन्था।।

अर्थात तर्क की भी कहीं स्थिति नहीं है, श्रुतियाँ भी भिन्न भिन्न हैं, एक ही ऋषि नहीं है कि जिसका मत प्रमाण माना जाय तथा धर्म का तत्त्व गुहा में निहित हैं अर्थात् अत्यन्त गूढ़ है; अतः जिससे महापुरुष जाते रहे हैं, वही मार्ग है।

इस युग में भगवान श्रीरामकृष्णदेव ही ऐसे महात्मा हैं जो हमें सही मार्ग पर चलना सिखलाते हैं। कैसे इस मार्ग पर अग्रसर होंगे इस हेतु वे बतलाते हैं -

१ भगवान के नाम का सर्वदा गुणगान करना चाहिए,
२ सत्संग करते रहना चाहिए,
३ निर्जन में ईश्वर का चिन्तन करते रहना चाहिए, और

४ सत् एवं असत् का नित्य विचार करते रहना चाहिए कि ईश्वर ही नित्य एवं सत् वस्तु है, यही विचार के योग्य है।

इसी प्रकार उनके उपदेशानुसार साधक अपने जीवन में उतारें और शिवज्ञान से जीव सेवा करता चले तो निश्चय ही जीवन में भगवद्भक्ति, ज्ञान एवं सेवा जैसे गुणों सहित सफलता प्राप्त होती है और भगवद् दर्शन प्राप्त होगा। इससे स्वयं के साथ-साथ दूसरों का भी सार्विक कल्याण होगा।

पावन-त्रिदेवों के आदर्शो को अपने जीवन में चरितार्थ करने वालो में से हमारे पूज्य गहनानन्दजी भी भक्तों को उसी आदर्श पर प्रेरित करते रहे। उनके पत्रों एवं संस्मरणों के इस संकलन से साधकों एवं पाठकों को अपना मार्ग सुगम प्रतीत होगा इसी आशा का संचार होगा।

इस कार्य में लगे सभी व्यक्तियों को विशेषतः स्वामी तत्परानन्द, कैलाश सिंह, ब्रह्मचारी निर्मल और बीकानेर आश्रम के सभी भक्तों एवं कार्यकर्ताओं को मेरी शुभेच्छा एवं प्रभु चरणों में प्रार्थना।

इति--

शुभानुध्यायी

(स्वामी शिवमयानन्द)

Phone PBX :
(033) 2654-1144 / 1180
(033) 2654-9581 / 9681
FAX : (033) 2654-4346
Email : mail@belurmath.org
Website : www.belurmath.org

RAMAKRISHNA MATH
(The Headquarters)
P.O. BELUR MATH, DIST. HOWRAH
WEST BENGAL : 711202
INDIA



10.10.2017

Sri Arjun Singh
Secretary
Ramakrishna Ashrama
RK Ashrama Marg,
Near Hotel Karni Bhawan Palace
Karninagar, Lalgarh
Bikaner 334001 Rajasthan

प्रिय श्रीअर्जुन सिंह,

महर्षि पतंजलि ने अपने योगसूत्र में कहा है – 'वीतरागविषयं वा चित्तं' | इसके व्याख्यान में स्वामी विवेकानंद ने व्यक्त किया है की योग या समाधि का अन्यतम उपाय है उन महापुरुषों के चरित्रों पर मनन करना जिन्होंने विषय-आसक्ति से छुटकारा पा लिया है | इसीलिए महान साधकों की जीवनी तथा उपदेश हमारी आध्यात्मिक प्रगति के सहायक हैं | अत: संत-वचन की महिमा हमारी आध्यात्मिक परम्परा में प्रतिष्ठित है - 'साधू वचन जलरूप है, बरसै अमृत धार' |

इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए परमपूज्य स्वामी गहनानन्दजी महाराज के पत्रों पर आधारित 'गहन-आनंद-चिंतन' नामक पुस्तक प्रकाशित करने की आपकी यह परियोजना अत्यंत सराहनीय है| हालाँकि ये पत्र विशेष व्यक्तियों के प्रति महाराज के निजी उपदेश हैं फिर भी उनमें कुछ ऐसे सामान्य तथा आवश्यक तत्त्व हैं जो सभी के लिए लाभकारी सिद्ध होंगे, ऐसा विश्वास है|

नमस्कार,

शुभार्थी -

स्वामी सुहितानन्द

(स्वामी सुहितानन्द)
उपाध्यक्ष

Phone PBX :
(033) 2654-1144 / 1180
(033) 2654-9581 / 9681
FAX : (033) 2654-4346
Email : rkmhq@belurmath.org
rkmhqoffice@gmail.com
Website : www.belurmath.org

**RAMAKRISHNA MATH &
RAMAKRISHNA MISSION**
(The Headquarters)
P.O. BELUR MATH, DIST. HOWRAH
WEST BENGAL : 711202
INDIA



शुभकामना संदेश

अनादि-अनंत काल से सर्व त्यागी संन्यासी अपने विचार, उपदेश और त्यागमय जीवन से समाज का मार्गदर्शन करते आ रहे है, मुमुक्षुओं की ज्ञान-क्षुधा को तृप्त करते आ रहे हैं। श्री रामकृष्ण युग में भी यह महत नि:स्वार्थ कार्य उसी अविरल धारा से चल रहा है जैसा भगवान राम, कृष्ण, महावीर और भगवान बुद्ध के काल में चल रहा था।

ब्रह्मलीन परम पूज्यपाद स्वामी गहनानन्द जी महाराज का जीवन इसी पुण्य परंपरा का द्योतक है। पूज्यपाद महाराज ने समय समय पर अपने लिखित-कथित विचारों से अनगिनत जिज्ञासुओं के जीवन में पवित्रता, शांति और सद्भाव का संचार किया है।

यह जानकर मुझे आज अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि परम पूज्यपाद स्वामी गहनानन्द जी महाराज द्वारा समय समय पर आध्यात्मिक जिज्ञासुओं को लिखे गए अमृतरूपी शब्दों का आज 'गहन आनंद चिंतन' के रूप में प्रकाशन हो रहा है ।

मुझे पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक इस पीढ़ी और भावी पीढ़ी का आध्यात्मिक मार्ग सुगम और सुलभ करेगी। बीकानेर आश्रम के सभी सदस्यों की निष्ठा, लगन और पूज्यपाद महाराज के प्रति सभी का आदर और प्रेम सराहनीय है।

'गहन आनन्द चिंतन' के सफल प्रकाशन हेतु मै श्री श्री रामकृष्ण के चरणों में अपनी आतंरिक प्रार्थना निवेदित करता हु।

सुवीरानन्द
(स्वामी सुवीरानंद)

महासचिव
रामकृष्ण मठ एवं रामकृष्ण मिशन

RAMAKRISHNA MATH
P.O. Kankhal- 249408, Hardwar (Uttarakhand)
(A Branch of Ramakrishna Math, Belur Math, Howrah- 711202, W.B.)

☎: (01334)-244176
(01334)-246141
(01334)-244985
Fax: (01334)-244985
email-rkmkankhal@gmail.com
website: www.rkmkankhal.org



सन्देश

मुझे यह सुनकर बहुत आनन्द हुआ की तुम स्वामी गहनानन्दजी महाराज के पत्रों का संकलन कर उसे ग्रन्थरूप में प्रकाशित करने जा रहे हो ।

मैं यही कामना करता हूँ कि इस ग्रन्थ के पठन से साधकों में आध्यात्मिक जीवन में अग्रेसर होने की प्रेरणा प्राप्त हो । मैं इस ग्रन्थ के प्रकाशन में मेरी अनेकों शुभकामनाएँ देता हूँ ।

दिनांक ११.०१.२०१८

Sw. Akamananda

(स्वामी अकामानन्द)
रामकृष्ण मठ, कनलख
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
हिमालय

भगवान श्रीरामकृष्ण के अन्तरंग लीला सहचर स्वामी अखण्डानन्दजी महाराज के एक मात्र सशरीर संन्यासी शिष्य १०४ वर्षीय श्रद्धेय स्वामी अकामानन्दजी महाराज

RAMAKRISHNA MATH

P.O. Kankhal- 249408, Hardwar (Uttarakhand)

(A Branch of Ramakrishna Math, Belur Math, Howrah- 711202, W.B.)

☎: (01334)-244176
(01334)-246141
(01334)-244985
Fax: (01334)-244985
email-rkmkankhal@gmail.com
website: www.rkmkankhal.org



MESSAGE

I'm happy to learn that Ramakrishna Ashram, Bikaner has planned to bring out the letters, Srimat Swami Gahanananda Ji Maharaj, the 14th President of Ramakrishna math and mission had written to spiritual aspirants in replies to their queries for seeking guidance and clarity in spiritual practice. Letters written by a guru to spiritual aspirants are always helpful in progressing in the spiritual path and get the hurdles on the way removed. The words carry spiritual strength, prayer and blessings to the aspirant. Such letters have a wider appeal to the Spiritual seekers though written only for a particular disciple.

I'm sure the collection of letters will be of great use to all those earnest seekers in Spiritual path.

I thank the publisher and all those connected with this publication and pray for the choicest blessings of Sri Thakur, Maa and Swami ji.

With prayers

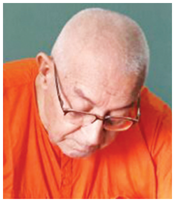
(Swami Tanmayananda)

Vasant Panchami

January 22, 2018

रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम

(रामकृष्ण मिशन बेलूड़ मठ, हावड़ा, की एक शाखा)
जी.ई.रोड़ रायपुर-४९२००१ (छ.ग)
दूरभाष (०७७१) २२२५२६६, २२२४११९, ४०३६९५९



१.३.२०१८

प्रिय अर्जुन सिंह जी,
सचिव, रामकृष्ण आश्रम, बीकानेर।

आपको और वहाँ के सभी भक्तों को हमारी ओर से शुभकामनाएं।

आपका १६ नवम्बर २०१७ का पत्र मुझे मिला। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि रामकृष्ण आश्रम, बीकानेर पूज्यपाद स्वामी गहनानन्दजी महाराज, जो रामकृष्ण मठ मिशन के १४वें संघाध्यक्ष थे, उनके पत्रों का संकलन पुस्तकाकार प्रकाशित करने जा रहा है।

मैं बेलूड़ मठ और सारदापीठ आदि मिलाकर लगभग १५-१६ वर्षों तक बेलूड़ मठ में रहा। तब पूज्यपाद महाराज जी के साथ अनकों बार मुझे मिलने का सौभाग्य मिला।

मुझे विश्वास है कि उनके इन पत्रों से भक्तों को आध्यात्मिक मार्गदर्शन मिलेगा। ये पत्र भक्तों के जीवन के विकास में बहुत सहायक होंगे।

मैं श्रीश्रीठाकुर से आप सबके मंगल की कामना करता हूँ।

स्वामी सत्यरूपानन्द

(स्वामी सत्यरूपानन्द)
सचिव

RAMAKRISHNA MISSION
Vivekananda Smriti Mandir
(A branch centre of Ramakrishna Mission, Belur Math, Howrah)
KHETRI - 333503
Dist. Jhunjhunu (Rajasthan)

Phone : (01593) 234312
E-mail : rkmkhetri@gmail.com
Website : www.rkmissionkhetri.org

सन्देश



२६ अक्टूबर २०१७
माँ जगद्धात्री पूजा दिवस

प्रिय भाई तत्परानन्द,

एक बार ट्रेन में पूज्यपाद श्रीमत् स्वामी गहनानन्दजी के साथ मुम्बई से पूना जा रहा था। बीच रास्ते में इंजिन में कोई खराबी आने के कारण रेलगाड़ी बीच में ही खड़ी हो गई। लगभग तीन घण्टे रेलगाड़ी वहीं खडी रही। यात्रीगण सब अधीर हो उठे थे। इस समय पूज्यपाद महाराजजी निर्विकार रहे। उन्होंने अपने बैग से पत्राचार की फाईल निकालने के लिए बोला। एक के बाद एक पत्र वे पढ़ने लगे और उनका संक्षिप्त उत्तर उनके बताए अनुसार मैं लिपिबद्ध करने लगा। रेलगाड़ी के इतने समय तक रूके रहने का पता ही न चला और सारा समय इन पत्रों के उत्तर देने में ही चला गया।

मुझे दीर्घ १५ साल तक पूज्यपाद महाराजजी के संग में रहने का सौभाग्य मिला। मैंने उनको बहुत ही पास से देखा। उनका सम्पूर्ण जीवन ईश्वर केन्द्रीत था। सदैव सब कार्यो के बीच में भी वे मन के गहन अन्तःस्थल में सर्वदा ईश्वर के साथ युक्त रहते। इसलिए उनको कठिन समय में भी मैंने कभी विचलित होते हुए नहीं देखा और न ही कभी किसी कारण से विषादग्रस्त होते हुए देखा। अटूट भगवद् विश्वास का सम्बल बना कर वे सभी प्रतिकूल परिस्थितियों का अतिक्रमण कर जाते। इसीलिए वे सदैव प्रसन्नचित्त रहते। सभी के लिए जैसे वे प्रेरणा के उद्गम बिन्दु की भातिं थे।

उनकी यही साम्य अवस्था को वे अपने सम्पर्क में आने वालों के बीच संचार करने की चेष्टा करते। दीक्षा दान के बाद दीक्षित भक्तों को वे स्मरण करवा देते कि –'आज से सर्वदा मन में धारण कर लो कि तुम्हारे इष्टदेवता तुम्हारे हृदय में बैंठे हैं। उनका ख्याल रखना।'

जो भक्तगण उनके पास आते और अपनी समस्याओं को उनके समक्ष रखते तब पूज्यपाद महाराजी उनको पूरा समय देते और धैर्य से सब कुछ सुनकर उनकी समस्याओं का समाधान कर देते। जो भक्तगण दूर रहते, वे पत्रों के माध्यम से सम्पर्क में रहते। पूज्यपाद महाराजजी उनके पत्र पढ़कर संक्षेप में उनके उत्तर बोल देते। प्राप्तकर्ता को समझने में सुविधा हो इसलिए संक्षिप्त उत्तर को कुछ विस्तार से लिखवाते, जिसे वे देख-सुनकर अपने हस्ताक्षर करते।

पूज्यपाद महाराजजी के पत्र उपरोल्लेखित आध्यात्मिक भाव एवं भक्तों के प्रति कल्याण की भावना से ही निसृत हुए हैं। उनके उपदेश सकारात्मक थे - जो निराश मन में भी उत्साह का संचार कर देते जो नई आशा के साथ उन्हें उत्तम पथ पर चलने की प्रेरणा देते।

यह पुस्तक पूज्यपाद महाराजजी भक्तों के प्रति पत्रों के माध्यम से दिय गये उपदेशों का हिन्दी भाषा में संकलन है। यह साधक-भक्तों के लिए सर्वदा सभी परिस्थितियों में एक लाभकारी उपयोगी ग्रन्थ सिद्ध होगा जो कि वर्तमान में भक्तों के मन में उठने वाले संशयों और समस्याओं के समाधान में लाभकारी होंगे। और तो और इन पत्रों के गम्भीर भावों का गहनता से अध्ययन करने से सबसे उत्तम लाभ जो साधकों को मिलेगा वह यह कि उन्हें पूज्य महाराजजी के महान व्यक्तित्व को समझने और स्पर्श करने का अवसर मिलेगा जो पाठक को धन्य करेगा।

बीकानेर, रामकृष्ण आश्रम के सचिव श्री अर्जुन सिंह एवं हमारे संन्यासी भाई तत्परानन्द जिन्होंने इन पत्रों को संकलन कर एवं इसको पुस्तक का रूप प्रदान कर सभी को पूज्य महाराजजी जैसे महापुरूष के सम्पर्क में सदा रहने का सुयोग कर दिया है, वे धन्यवाद के पात्र हैं। मैं इस पुस्तक के सहर्ष सर्वाधिक प्रचार की कामना करता हूँ।

स्वामी आत्मनिष्ठानन्द
सचिव, रामकृष्ण मिशन, खेतड़ी



सन्देश

यह जानकार हार्दिक प्रसन्नता हुई कि रामकृष्ण आश्रम, बीकानेर द्वारा परम पूज्य ब्रह्मलीन स्वामी गहनानन्द जी महाराज के द्वारा भक्तो को उनकी जिज्ञासाओं के समाधान स्वरूप लिखे गए पत्रों का संकलन "गहन आनन्द चिन्तन" का प्रथम भाग प्रकाशित किया जा रहा है।

इस महत कार्य में जुड़े सभी महत जनों को इसके लिए हार्दिक बधाई।

""गहन आनन्द चिन्तन" की सफलता के लिए श्री ठाकुर, माँ व स्वामी जी के चरणों में मेरा प्रणाम।

स्वामी देवप्रभानन्द

स्वामी देवप्रभानन्द

सचिव
रामकृष्ण आश्रम, जयपुर

सत्यमेव जयते

वसुन्धरा राजे

मुख्यमंत्री राजस्थान



संदेश

हर्ष का विषय है कि रामकृष्ण आश्रम, बीकानेर अपने भक्तों को आध्यात्मिक जिज्ञासा को शांत करने के लिए 'गहन आनन्द चिन्तन' पुस्तक का प्रकाशन करने जा रहा है।

यह सराहनीय है कि भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करने की प्रवृत्ति के अनुरूप रामकृष्ण आश्रम अपने भक्तों की आध्यात्मिक जिज्ञासा का समाधान करते हैं। मानव जीवन में शारीरिक व मानसिक स्वास्थता के साथ आध्यात्मिक ज्ञान का विशेष योगदान होता है।

मैं 'गहन आनन्द चिन्तन' पुस्तक के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करती हूं।

वसुन्धरा राजे

(वसुन्धरा राजे)

Sushila Kumari
Shiv Villas, Lallgarh Palace
Bikaner - 33 4001
Tel : 91-0151-2200575, 2201855

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि पूज्यपाद स्वामी गहनानन्द जी महाराज द्वारा समय-समय पर अपने भक्तों की जिज्ञासा - समाधान हेतु उनके द्वारा लिखे गये पत्रों को संकलित कर स्वामी तत्परानन्द जी उन्हें ''गहन आनन्द चिन्तन'' नाम से पुस्तक रूप में प्रकाशित करने जा रहे हैं। यह उनका स्तुत्यपरक प्रयास है। इस पुस्तक के प्रकाशित होने के पश्चात जिज्ञासु गण पूज्यपाद स्वामी गहनानन्द जी के विचारों को पढ़कर लाभान्वित होते रहेगें।

ऐसे शुभ व सुन्दर प्रकाशन के लिये स्वामी तत्परानन्द जी को मेरी सम्मान सहित शुभकामनाओं सहित बधाई।

शुभेच्छु

सुशीला कुमारी

(सुशीला कुमारी)

राजमाता, बीकानेर

अर्जुन सिंह

सचिव

रामकृष्ण आश्रम, बीकानेर

‘GURU KRIPA’

Smt. Padma Devi Khatri
W/O Late Shri Hari Kishan Khatri
Advocate, TAX CONSULTANT

K.E.M.ROAD
BIKANER – 334001 (RAJ)



घणा वाल्हा सुत सोमेश

औ जाण’र घणौ हरख होयौ कै थूं थारै गुरुदेव रामकृष्ण मठ अर मिशन, बेलूड़ मठ रा १४वां पाटवी, परम पूज्यपाद श्रीमत् स्वामी गहनानन्दजी महाराज रै आपरै भगतां री जिग्यासा रै समाधान सारू लिख्योड़ा ३७५ पत्रां नैं अेकठ करपोथी रूप छपावण में लाग्योड़ौ है।

थनै तो ध्यान ई है कै थारा बापूजी स्व. श्री हरिकिशनजी खत्री खुद अेक सिरै साधक रैया अर थूं रामकृष्ण मठ अर मिशन रा आध्यात्मिक ग्यान रा पूग्योड़ा महात्मावां रै चरणां री रज में रैय’र वांरी सेवा कर रैयो है। थारौ औ सुकाज म्हनै म्हारै सारू मदालसा रै सफळ मातृत्व रै गौरव सरीखौ लखावै।

म्हैं, भगवान श्रीरामकृष्णदेव, श्रीश्रीमां सारदादेवी, स्वामीजी महाराज अरपरम पूज्यपाद गुरुदेव श्रीमत् स्वामी रंगनाथानन्दजी महाराज सूं ‘गहन आनन्द चिन्तन’ रै सफळ प्रकासण सारू घणै मान अरज करूं हूं।

थारै कल्याण री कामना रै सागै,

पद्मा

(श्रीमती पद्मादेवी)

(राजस्थानी भाषा के पत्र का हिन्दी में अनुवाद)

प्रिय पुत्र सोमेश,

यह जानकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि तुम अपने गुरुदेव रामकृष्ण मठ एवं मिशन, बेलूड़ मठ के १४वें अध्यक्ष, परम पूज्यपाद श्रीमत् स्वामी गहनानन्दजी महाराज द्वारा उनके भक्तों के जिज्ञासा-समाधान के लिए लिखे गये ३७५ पत्रों का संकलन कर पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने जा रहे हो।

जैसा कि तुम्हारे पिताश्री स्व० श्री हरि किशन जी खत्री स्वयं एक उच्च कोटि के साधक रहे और तुम रामकृष्ण मठ एवं मिशन के महान आध्यात्मिक उपलब्धि सम्पन्न महात्माओं की चरणों की रज में रह कर उनकी सेवा कर रहे हो यह मुझे मदालसा के सफल मातृत्व के गौरव को प्रदान करता है।

मैं, भगवान श्रीरामकृष्णदेव, श्रीश्रीमाँ सारदादेवी, स्वामीजी महाराज तथा परम पूज्यपाद गुरुदेव श्रीमत् स्वामी रंगनाथानन्दजी महाराज से "गहन आनन्द चिन्तन" के सफल प्रकाशन के लिए प्रार्थना करती हूँ।

तुम्हारे कल्याण की कामना के साथ
श्रीमती पदमा देवी खत्री

ॐ

स्तव पाठ

वैदिकशांतिवचनानि

ॐ वाङ्मे मनसि प्रतिष्ठिता, मनो मे वाचि प्रतिष्ठितम्, आविरावीर्म एधि,
वेदस्य म आणीस्थः, श्रुतं मे मा प्रहासीरनेनाधीतेनाहोरात्रान् संदधामि,
ऋतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि, तन्मामवतु, तद्वक्तारमवतु, अवतु माम्,
अवतु वक्तारम्, अवतु वक्तारम् ।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।१।।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।२।।

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः। शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः।
शं नो विष्णुरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि।
तन्मामवतु। तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम् ।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।३।।

ॐ सहनाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।४।।

ॐ आप्यायंतु ममांगानि, वाक्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रमथ बलमिंद्रियाणि च सर्वाणि।
सर्वं ब्रह्मौपनिषदं। माऽहं ब्रह्म निराकुर्यां, मा मा ब्रह्म निराकरोदनिराकरणमस्तु,
अनिराकरणं मेऽस्तु। तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि संतु,
ते मयि संतु।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।५।।

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरगैस्तुष्टुवाग्ं संस्तनुभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः।।
स्वस्ति न इंद्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।६।।

ॐ तच्छ योरावृणीमहे। गातुं यज्ञाय। गातुं यज्ञपतये। दैवी स्वस्तिरस्तु नः।
स्वस्तिर्मानुषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदे। शं चतुष्पदे।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।७।।

ॐ द्यौः शांतिरतंरिक्षं शांतिः पृथिवी शांतिरापः शांतिरोषधयः शांति वनस्पतयः
शांतिर्विश्वेदेवाः शांतिर्ब्रह्म शांतिः सर्व शांतिः शांतिरेव शांतिः।
सा मा शांतिरेधि।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।८।।

असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माऽमृतं गमय।।१।।

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।
वीर्यंमसि वीर्यं मयि धेहि।
बलमसि बल मयि धेहि।
ओजोऽस्योजो मयि धेहि।
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि।
सहोऽसि सहो मयि धेहि।।२।।

श्रीगुरुस्तोत्रम्

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।। १।।
अखंडमंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।। २।।
अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानांजनश्लाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।। ३।।
स्थावरं जंगम व्याप्तं येन कृत्स्नं चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।। ४ ।।
चिद्रूपेण परिव्याप्तं त्रैलोक्यं सचराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।। ५।।
सर्वश्रुतिशिरोरत्नसमुद्भासितमूर्तये।
वेदांतांबुजसूर्याय तस्मै श्रीगुरवे नमः।। ६।।
चैतन्यं शाश्वतं शांतं व्योमातीतं निरंजनम्।
बिंदुनादकलातीतस्तस्मै श्रीगुरवे नमः।। ७।।
ज्ञानशक्तिसमारूढस्तत्वमालाविभूतिषतः।
भुक्तिमुक्तिप्रदाता च तस्मै श्रीगुरवे नमः।। ८।।
अनेकजन्मसंप्राप्तकर्मेंधनविदाहिने।
आत्मज्ञानाग्निदानेन तस्मै श्रीगुरवे नमः।। ९।।
शोषणं भवसिंधोश्च प्रापणं सारसंपदः।
यस्य पादोदकं सम्यक् तस्मै श्रीगुरवे नमः।। १०।।
न गुरारधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः।
तत्त्वज्ञानात्परं नास्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः।। ११।।
मन्नाथः श्रीजगन्नाथौ मद्गुरुः श्रीजगदगुरुः।
मदात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्रीगुरवे नमः।। १२।।
गुरुरादिरनादिश्च गुरुः परमदैवतम्।
गुरोः परतरं नास्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः।। १३।।
ब्रह्मानंदं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति
द्वंदातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।। १४।।

श्रीरामकृष्णदयाभिक्षास्तव

भवसागर-तारण-कारण हे। रविनन्दन-बन्धन-खण्डन हे।।
शरणागत किंकर भीत मने। गुरुदेव दया करो दीनजने।। १।।

हे भवसागर से तारनेवाले ! हे यम के बन्धन (मृत्युपाश) के विनाशक ! मैं तुम्हारा सेवक भयभीत चित्त से तुम्हारी शरण में आया हूँ। हे गुरुदेव, मुझ दीन पर दया करो।

हृदिकन्दर-तामस-भास्कर हे। तुमि विष्णु प्रजापति शंकर हे।।
परब्रह्म परात्पर वेद भणे। गुरुदेव दया करो दीनजने।। २।।

हे हृदयरूपी अन्धकारपूर्ण गुहा को उद्भासित करनेवाले सूर्य ! तुम ब्रह्मा, विष्णु, महेश हो। वेद तुम्हीं को परब्रह्म परात्पर कहते हैं। हे गुरुदेव, मुझ दीन पर दया करो।

मन-वारण-शासन-अंकुश हे। नरत्राण तरे हरि चाक्षुष हे ।।
गुणगान-परायण देवगणे। गुरुदेव दया करो दीनजने ।। ३।।

तुम मनरूपी मतवाले हाथी को शासन करने में अंकुश-स्वरूप हो। तुम जीवों के उद्धार के लिए अवतीर्ण साक्षात् हरि ही हो। देवगण सतत तुम्हारे गुणगान में रत रहते हैं। हे गुरुदेव, मुझ दीन पर दया करो।

कुलकुण्डलिनी-घुम-भंजक हे। हृदिग्रन्थि-विदारण-कारक हे।।
मम मानस चंचल रात्रदिने। गुरुदेव दया करो दीनजने।। ४।।

हे कुलकुण्डलिनी (सुप्त आध्यात्मिक शक्ति) की निद्रा को शान्ति भंग करनेवाले ! हृदय-ग्रन्थियों का भेदन करने वाले ! मेरा मन दिनरात चंचल रहता है। हे गुरुदेव, मुझ दीन पर दया करो।

रिपुसूदन मंगल-नायक हे। सुख-शान्ति-वराभय-दायक हे।।
त्रयताप हरे तव नाम-गुणे। गुरुदेव दया करो दीनजने।। ५।।

हे कामक्रोधादि रिपुओं के संहारक ! मंगलविधायक ! हे सुख, शान्ति, अभय, वर के दाता! तुम्हारे नाम की महिमा से त्रिविध ताप दूर हो जाते हैं। हे गुरुदेव, मुझ दीन पर दया करो।

अभिमान-प्रभाव-विमर्दक हे। गतिहीन-जने तुम रक्षक हे।।
चित शंकित वंचित भक्तिधने। गुरुदेव दया करो दीनजने।। ६।।

हे अहंकार के प्रभाव के विध्वंसक! तुम गतिहीन जनों के रक्षणकर्ता हो। भक्तिसम्पदा से वंचित होने की शंका से मेरा चित्त सदैव त्रस्त रहता है। हे गुरुदेव, मुझ दीन पर दया करो।

तव नाम सदा शुभ-साधक हे। पतिताधम-मानव-पावक हे।।
महिमा तव गोचर शुद्ध मने। गुरुदेव दया करो दीनजने।। ७।।

तुम्हारा नाम सदा कल्याणकारी है; वह अधम, पतित जनों को भी पावन करता है। तुम्हारी महिमा केवल शुद्ध मन में ही अनुभूत होती है। हे गुरुदेव, मुझ दीन पर दया करो।

जयसद्गुरु ईश्वर-प्रापक हे। भवरोग-विकार-विनाशक हे।।
मन जेन रहे तव श्रीचरणे। गुरुदेव दया करो दीनजने।। ८।।

भगवत्प्राप्ति के सहायक हे सद्गुरो, तुम्हारी जय हो ! तुम भवरोग के विकारों का विनाश करते हो। तुम्हारे श्रीचरणों में मेरा मन सदा लगा रहे। हे गुरुदेव, मुझ दीन पर दया करो।

श्रीसारदास्तवः

प्रकृतिं परमामभयां वरदां नररूपधरां जनतापाहराम्।
शरणागतसेवकतोषकरीं प्रणमामि परां जननीं जगताम्।।१।।

जो मानव-शरीर-धारिणी परमा प्रकृति (आद्याशक्ति) है, जो अभयस्वरूपा एवं वरदायिनी हैं, जो लोगों के दुःखों को हरण करती हैं, तथा शरण आये सेवकों को सन्तोष प्रदान करती हैं, उन जगत् की परम जननी को मैं प्रणाम करता हूँ।

गुणहीनसुतानपराधयुतान् कृपयाद्य समुद्धर मोहगतान्।
तरणीं भवसागरपारकरीं प्रणमामि परां जननीं जगताम्।।२।।

(हे माँ) कृपा करके तुम अपनी गुणहीन, अपराधी तथा मोहग्रस्त सन्तानों का आज ही उद्धार करो। जो भवसागर की पार करनेवाली नौका हैं, उन जगत् की परम जननी को मैं प्रणाम करता हूँ।

विषयं कुसुमं परिहृत्य सदा चरणाम्बुरूहामृतशान्तिसुधाम्।
पिब भृङ्गमनो भवरोगहरां प्रणमामि परां जननीं जगताम्।।३।।

हे मेरे मनरूपी भ्रमर ! तू विषय-पुष्पों को त्यागकर सदा उन श्रीपादपद्मों में भवरोगनाशक, शान्तिदायी, अमृतमय मधु का पान करता रह ! मैं उन जगत् की परम जननी को प्रणाम करता हूँ।

कृपां कुरुमहादेवि सुतेषु प्रणतेषु च।
चरणाश्रयदानेन कृपामयि नमोऽस्तु ते।।४।।

हे महादेवि ! तुम अपने प्रणत सन्तानों को चरणों में आश्रय देकर कृपा करो। हे कृपामयि ! तुम्हें प्रणाम है।

लज्जापटावृते नित्यं सारदे ज्ञानदायिके।
पापेभ्यो नः सदा रक्ष कृपामयि नमोऽस्तु ते।।५।।

लज्जारूपी वस्त्र से आवृत हे सारदामाता ! तुम सदा ज्ञान प्रदान किया करती हो। हे कृपामयि ! तुम सदा पापों से हमारी रक्षा करो। तुम्हें प्रणाम है।

रामकृष्णगताप्राणां तन्नामश्रवणप्रियाम्।
तद्भावरञ्जिंताकारां प्रणमामि मुहुर्मुहुः।।६।।

जिनका चित्त सदा श्रीरामकृष्ण में तल्लीन है, जिन्हें रामकृष्ण-नाम सुनने में प्रसन्नता होती है एवं जो पूर्णतया श्रीरामकृष्ण की भावराशि में रंजित है, उन श्रीसारदादेवी को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ।

पवित्रं चरितं यस्याः पवित्रं जीवनं तथा।
पवित्रतास्वरूपिण्यै तस्यै कुर्मो नमो नमः।।७।।

जिनका चरित्र पवित्र है, जीवन पवित्र है, जो साक्षात् पवित्रता-स्वरूप हैं, उन देवी का बारम्बार प्रणाम है।

देवीं प्रसन्नां प्रणतार्तिहन्त्रीं योगीन्द्रपूज्यां युगधर्मपात्रीम्।
तां सारदां भक्तिविज्ञानदात्रीं दयास्वरूपां प्रणमामि नित्यम्।।८।।

उन आनन्दरूपिणी, प्रणतजनों की संकटहारिणी, श्रेष्ठ योगियों द्वारा पूजित, युगधर्म की पालनकर्त्री, भक्ति-तथा विज्ञान-दायिनी, दयास्वरूपिणी श्रीसारदादेवी को मैं सदैव प्रणाम करता हूँ।

स्नेहेन बध्नासि मनोऽस्मदीयं दोषानशेषान् सगुणीकरोषि।
अहेतुना नो दयसे सदोषान् स्वाङ्के गृहीत्वा यदिदं विचित्रम्।।९।।

हे माँ तुम हमारे मन को स्नेह के द्वारा बाँध लेती हो, हमारे अगणित दोषों को गुणों में परिवर्तित कर देती हो, तथा हम दोषपूर्ण जीवों को अपनी गोद में ले अकारण दया बरसाती हो-यह बड़ा आश्चर्य है।

प्रसीद मातर्विनयेन याचे नित्यं भव स्नेहवती सुतेषु।
प्रेमैकबिन्दुं चिरदग्धचित्ते विषिञ्च चितं कुरू नः सुशान्तम।।१०।।

हे माँ ! मैं विनयसहित प्रार्थना करता हूँ कि तुम प्रसन्न होओ, अपनी सन्तानों के प्रति सदा स्नेहपूर्ण रहो तथा हमारे सततशोकसन्तप्त हृदय में एक बिन्दु प्रेम का सिंचन कर हमें शान्त कर दो।

जननीं सारदां देवीं रामकृष्णं जगद्गुरुम्
पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः।।११।।

जननी श्रीसारदादेवी तथा जगदगुरु श्रीरामकृष्णदेव के चरणकमलों को हृदय मैं धारण कर मैं उन्हें बारम्बार प्रणाम करता हूँ।

विवेकानन्द-गीतिस्तोत्रम्

मूर्तमहेश्वरमुज्ज्वलभास्करमिष्टममरनरवंद्यम् ।
वंदे वेदतनुमुज्जितगर्हितकांचनकामिनीबंधम ।।१।।

सूर्य सदृश उज्ज्वल, देवताओं और मनुष्यों के पूज्य, निन्दित कामिनी और कांचन रूपी बंधन का वर्जन करने वाले, वेदमूर्ति, नररूप में अवतीर्ण, इष्ट-स्वरूप, महादेव विवेकानन्द की मैं वन्दना करता हूँ।

कोटिभानुकरदीप्तसिंहमहोकटितटकौपीनवंतम् ।
अभीरभीहुंकारनादितदिङ्मुखप्रचंडतांडवनृत्यम् ।।२।।

अहो ! करोड़ों सूर्य की किरणों के समान समुज्ज्वल, सिंह सदृश, कटिदेश (कमर) में कौपीन मात्र धारण करने वाले, "अभी-अभी" रव से दिशा समूहों को निनादित करते हुए प्रचण्ड भाव से ताण्डव नृत्य करने वाले उन्हीं इष्ट स्वरूप विवेकानन्द की मैं वन्दना करता हूँ।

भुक्तिमुक्तिकृपाकटाक्षप्रेक्षणमघदलविदलनदक्षम् ।
बालचंद्रधरमिंदुवंद्यमिह नौमि गुरुविवेकानंदम् ।।३।।

कृपा-कटाक्ष से भोग और मोक्ष को देखनेवाले, पाप समूहों को विदलित करने में विशेष रूप में दक्ष, बालचन्द्रमा से शोभित मस्तक वाले महादेव स्वरूपइंदु नामक शिष्य की वन्दना के द्वारा उन्हीं गुरु विवेकानन्द की मैं प्रणाम करता हूँ।

रामकृष्णस्तोत्रम्

आचंडालाप्रतिहतरयो यस्य प्रेमप्रवाहः
लोकातीतोऽप्यहह न जहौ लोककल्याणमार्गम्।
त्रैलोक्येऽप्यप्रतिममहिमा जानकीप्राणबंधो
भक्त्या ज्ञानं वृतवरवपुः सीतया यो हि रामः।।१।।

जिनका प्रेमस्रोत ऐसा प्रबल है कि चाण्डालादि तक अप्रतिहत वेग से प्रवाहित होता है अहा ! जिन्होंने अमानव हो कर भी लोगों के मंगल साधन के साधन के मार्ग का परित्याग नहीं किया था, जिनकी महिमा त्रिभुवन में अनुपम है तथा जो सीता के प्राण-स्वरूप रामचन्द्र थे, जिनका ज्ञारूरूप श्रेष्ठ श्री रामतनु भक्तिरूपिणी श्रीसीता के द्वारा आवृत है।

स्तब्धीकृत्य प्रलयकलितं वाहवोत्थं महांतं
हित्वा रात्रिं प्रकृतिसहजामंधतामिस्रमिश्राम्।
गीतं शांतं मधुरमपि यः सिंहनादं जगर्ज
सोऽयं जातः प्रथितपुरुषो रामकृष्णस्त्विदानीम्।।२।।

जिन्होंने श्रीकृष्ण रूप में प्रलय सदृश्य अति भयानक युद्ध-कोलाहल को स्तब्ध करके तथा स्वाभाविक घोर प्रगाढ़ अन्धकार से परिपूर्ण अज्ञान-रजनी के अन्धकार को विदीर्ण करके सिंहनाद के साथ शान्त तथा मधुर गीताशास्त्रका उपदेश दिया था, वे प्रख्यात पुरुष ही अब रामकृष्णरूप में अवतीर्ण हुए हैं।

नरदेव देव जय जय नरदेव।।
शक्तिसमुद्रसमुत्थतरंगं दर्शितप्रेमविजृंभितरंगम्।
संशयराक्षसनाशमहास्त्रं यामि गुरुं शरणं भववैद्यम्।।३।।

हे नररूपधारी देवता, हे देव, हे नरदेव तुम्हारी जय हो, जय हो। जो महाशक्ति रूप समुद्र से उठे हुए तरंग स्वरूप है, जो प्रेम की लीला दिखाने वाले हैं जो संशय-राक्षस के विनाश के लिए महान अस्त्र स्वरूप हैं उन्हीं संसार-रोग के चिकित्सक गुरु का मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ। हे नररूपधारी देवता, हे देव, हे नरदेव तुम्हारी जय हो, जय हो।

अद्वयतत्त्वसमाहितचित्तं प्रोज्जवलभक्तिपटावृतवृत्तम्।
कर्मकलेवरमद्भुतचेष्टं यामि गुरुं शरण भववैद्यम्।।४।।
नरदेव देव जय जय नरदेव।।

जिनका चित्त अद्वैत तत्त्व में समाहित है, जिनका चरित्र अति उज्ज्वल भक्तिरूपी वस्त्र के द्वारा आवृत है, जिनका जीवन लोककल्याण कार्य में नियुक्त है, जिनकी कार्यावली अपूर्व है, मैं उन भवरोग के वैद्य श्रीगुरु का आश्रय ग्रहण करता हूँ। हे नरदेव, हे देव, हे नरदेव तुम्हारी जय हो, जय हो।

श्रीरामकृष्णस्तोत्रदशकम्

ब्रह्मरूपमादिमध्यशेषसर्वभासकं
भावषट्कहीनरूप-नित्यसत्यमद्वयम्।
वाङ्मनोऽतिगोचरं च नेतिनेतिभावितं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम्।।१।।

जो परब्रह्मस्वरूप हैं, जिनकी सत्ता से आदि मघ्य और अन्त में सभी वस्तुएँ प्रकाश पाती हैं, और जो छः विकारों से रहित हैं, वाणी और मन के परे हैं नित्य सत्य स्वरूप हैं, जिनको छोड़कर और दूसरा पदार्थ नहीं है, जो 'नेति-नेति' इस वेद वाक्य की सहायता से चिन्तनीय हैं, उन्हीं परम देवता भगवान् श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ।

आदितेयभीहरं सुरारिदैत्यनाशकं
साधुशिष्टकामदं महीसुभारहारकम्।
स्वात्मरूपतत्त्वकं युगे युगे च दर्शितं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम्।।२।।

जो अदिति के पुत्र देवताओं का भय दूर करते हैं, देवताओं के शत्रु दैत्यों के कुल का विनाश करते हैं, साधुओं और शिष्ट लोगों को उनका अभीष्ट देने वाले हैं, पृथ्वी के पाप रूपी भार का हरण करने वाले हैं, अपना स्वरूप और तत्त्व युग-युग में (भक्तों के निकट) प्रकट करने वाले हैं, उन्हीं परम देवता भगवान श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ।

सर्वभूतसर्गकर्मसूत्रबंधकारणं
ज्ञानकर्मपापमपुण्यतारतम्यसाधनम्।
बुद्धिवास-साक्षिरूप-सर्वकर्मभासनं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम्।।३।।

निखिल प्राणियों को जिन्होंने कर्मसूत्र में बाँध रखा है, संसार के ज्ञानकर्म एवं पाप-पुण्य के तारतम्य का जो विधान करते हैं, मनुष्य के हृदय रूपी घर में जो वास करते हैं, जो निर्लिप्त हैं, साक्षी स्वरूप हैं और सब कर्मों के प्रेरक हैं उन्हीं परम देवता भगवान श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ।

सर्वजीवपापनाशकारणं भवेश्वरं
स्वीकृत च गर्भवासदेहधानमीदृश्म्।
यापितं स्वलीलया च येन दिव्यजीवनं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम्।।४।।

जो सभी जीवों के पापों का नाश करने वाले हैं, ब्रह्माण्ड के ईश्वर होकर भी (जीव के प्रति करुणा के कारण) गर्भ वास एवं इस प्रकार का शरीर बन्धन जिन्होंने स्वेच्छा से ग्रहण किया, जिन्होंने दिव्य जीवनयापन कर अपनी बहुत प्रकार की ईश्वरीय लीला प्रकट की, उन्हीं परम देवता भगवान श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ।

तुल्यलोष्टकांचनं च हेयनेयधीगतं
स्त्रीषु नित्यमातृरूपशक्तिभावभावुकम्।
ज्ञानभक्तिभुक्तिमुक्तिशुद्धबुद्धिदायकं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम्।।५।।

मिट्टी के ढेले एवं कांचन में जिनका समज्ञान था, जिनके मन में त्याज्य एवं ग्राह्य बुद्धि तिरोहित हो गई थी, जो सभी स्त्रियों को सर्वदा जगन्माता की महाशक्ति के रूप में देखते थे-ज्ञान, भक्ति, भुक्ति (इस लोक और परलोक का सुख), मुक्ति एवं शुद्ध बुद्धि देने वाले, उन्हीं परम देवता भगवान श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ।

सर्वधर्मगम्यमूलसत्यतत्त्वदेशकं
सिद्धसर्वसंप्रदाय-संप्रदायवर्जितम्

सर्वशास्त्रमर्मदर्शि-सर्वविन्निरक्षरं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम् ।।६ ।।

सभी धर्मो के मूल में जो एक सत्य तत्त्व है उसी का निर्देश देने वाले सभी सम्प्रदायों में सिद्ध होकर भी साम्प्रदायिक भावहीन, निरक्षर होकर भी सभी शास्त्रों का मर्म जानने वाले और सर्वज्ञ, उन्हीं परम देवता भगवान श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ।

चारुदर्श-कालिकासुगीतचारुगायकं
कीर्तनेषु मत्तवच्च नित्यभावविह्वलम्
सूपदेशदायकं हि शोकतापवारकं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम् ।।७ ।।

जिनका रूप अति मनोरम था, माँ काली के सम्बन्ध में भजन मधुर कंठ से गाया करते थे, कीर्तन में जो उन्मत्तवत् एवं ईश्वरीय भाव में सर्वदा विभोर रहते, भक्तों को सदुपदेश देते, एवं तीनों तापों से जले हुए का शोक और ताप निवारण करते, उन्हीं परम देवता भगवान श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ।

पादपद्मतत्त्वबोधशांतिसौख्यदायकं
सक्तचित्तभक्तसूनुनित्यवित्तवर्धकम् ।
दम्भिदर्पदारणं तु निर्भयं जगद्गुरुं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम् ।।८ ।।

अपने चरण कमलों के निगूढ़ तत्त्व का ज्ञान, शान्ति एवं सुख देने वाले अनुरक्त संतानगणों का (इस लोक और परलोक में) सदा संवर्धन करनेवाले, दम्भी लोगों का दर्प हरण करने वाले, निर्भय, जगदगुरु के रूप में जो संसार में अवतीर्ण हुए, उन्हीं परम देवता भगवान श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ।

पंचवर्षबालभावयुक्त-हंसरूपिणं
सर्वलोकरजनं भवाब्धिसंगभंजनम् ।
शांतिसौख्यसद्म-जीवजन्मभीतिनाशनं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम् ।।६ ।।

जो परमहंस रूप थे जिनका स्वभाव पाँच वर्ष के बालक की तरह था, जो सबको आनन्दित करते, प्राणियों की संसार-आसक्ति तोड़ते, शान्ति और सुख के आलय थे, जन्म-मृत्यु के भय का विनाश करने वाले उन्हीं परम देवता भगवान श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ।

धर्महानहारकं त्वधर्मकर्मवारकं
लोकधर्मचारणं च सर्वधर्मकोविदम्।
त्यागिगेहिसेव्यनित्यपावनांघ्रिपंकजं
तं नमामि देवदेव-रामकृष्णमीश्वरम्।।१०।।

जिन्होंने अधर्म की गति निवारण की एवं धर्म की ग्लानि दूर की, जिन्होंने सब धर्मो के विशारद होकर भी लोकशिक्षा के लिए लौकिक धर्म का आचरण किया, जिनके पवित्र चरण कमल त्यागी और गृहस्थ दोनों प्रकार के भक्तों के लिए ही नित्य सेव्य हैं, उन्हीं परम देवता भगवान श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ।

स्तोत्रशून्यसोमकं सदीशभावव्यंजकं
नित्यपाठकस्य वै विपत्तिपुजंनाशकम्।
स्यात्कदापि जापयागयोगभोगसौलभं
दुर्लभं तु रामकृष्णरागभक्तिभावनम्।।११।।

श्रीरामकृष्ण का माहात्म्य प्रकाशक यह स्तोत्र दशक (सोम=१, शून्य=०) सत् स्वरूप ईश्वर के भाव का व्यंजक है। जो नित्य इसका पाठ करते हैं उनकी विपत्तियाँ नष्ट होती हैं। जप-तप, याग-यज्ञ, योग-भोग-ये सभी कभी-कभी सुलभ हो सकते हैं, किन्तु भगवान् श्रीरामकृष्ण के प्रति अनुराग और उनकी भक्ति प्राप्त करना दुर्लभ है।

इति श्रीविरजानंन्दरचितं भक्तिसाधकम्।
स्तवसारं समाप्तं वै श्रीरामकृष्णतूणकम।।१२।।

स्वामी विरजानन्द द्वारा तूणक छन्द में रचित "श्रीरामकृष्णस्तोत्र-दशक" नामक भक्तिवर्द्धक यह स्तवन समाप्त हुआ।

सपार्षद–श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्

स्वामी सारदानन्दविरचितम्

सर्वधर्मस्थापकस्त्वं सर्वधर्मस्वरूपकः।
आचार्याणां महाचार्यो रामकृष्णाय ते नमः।।१।।

हे रामकृष्ण ! तुम सब धर्मों के स्थापक हो, सभी धर्मों के स्वरूप हो एवं आचार्यो में भी महान् आचार्य हो। तुमको नमस्कार करता हूँ।

यथाग्नेर्दाहिकाशक्ती रामकृष्णे स्थिता हि या।
सर्वविद्यास्वरूपां तां सारदां प्रणमाम्हम्।।२।।

अग्नि की दाहिका शक्ति के समान जो सर्वदा श्रीरामकृष्ण में अवस्थान करती हैं एवं जो सर्व विद्यास्वरूपिणी हैं, उन्हीं माँ सारदा देवी को मैं प्रणाम करता हूँ।

परतत्त्वे सदा लीनो रामकृष्ण समाज्ञया।
यो धर्मस्थापनरतो वीरेशं तं नमाम्यहम्।।३।।

जे श्रीरामकृष्ण की आज्ञा से हमेशा परम तत्त्व में लीन रहते थे एवं जो सदा धर्म स्थापन में परायण थे उन्हीं वीरेश्वर को (स्वामी विवेकानन्द को) मैं नमस्कार करता हूँ।

कालिन्दीफुल्लकमले माधवेन क्रीड़ारतः।
ब्रह्मानन्द ! नमस्तुभ्यं सद्गुरो लोकनायक।।४।।

यमुना के प्रस्फुटित कमलवन में माधव के साथ क्रीड़ा परायण, हे सदगुरु, हे लोकनायक ब्रह्मानन्द। तुमको नमस्कार करता हूँ।

योगानन्दः प्रेमानन्दश्चान्ये वै ये च पार्षदाः।
रामकृष्णगत प्राणाः सर्वांस्तान् प्रणमाम्यहम्।।५।।

रामकृष्णगतप्राण योगानन्द प्रेमानन्द आदि अन्यान्य जो सभी पार्षदगण हैं, उन सबको प्रणाम करता हूँ।

यह स्वामी सारदानन्द द्वारा विरचित “श्रीश्रीरामकृष्णसंघस्तोत्रम्” समाप्त हुआ।

सन्ध्या स्तोत्राणि
श्रीरामकृष्ण–आरात्रिकम्

खण्डन-भवबन्धन, जगवन्दन, वन्दि तोमाय।।
निरंजन, नररूपधर, निर्गुण, गुणमय।।१।।

मोचन-अघदूषण, जगभूषण, चिद्घनकाय।।
ज्ञानांजन-विमल-नयन, वीक्षणे मोह जाय।।२।।

भास्वर भाव-सागर, चिर-उन्मद प्रेम-पाथार।।
भक्तार्जन-युगलचरण, तारण-भव-पार।।३।।

जृम्भित-युग-ईश्वर, जगदीश्वर, योग सहाय।।
निरोधन, समाहित मन, निरखि तव कृपाय।।४।।

भंजन-दुखगंजन, करूणाघन, कर्मकठोर।।
प्राणार्पण-जगत-तारण, कृन्तन-कलिडोर।।५।।

वंचन-कामकांचन, अतिनिन्दित-इन्द्रियराग।।
त्यागीश्वर, हे नरवर, देहो पदे अनुराग।।६।।

निर्भय, गतसंशय, दृढनिश्चय-मानसवान।।
निष्कारण-भकतशरण, त्यजि जाति-कुल-मान।।७।।

सम्पद तव श्रीपद, भव गोष्पाद-वारि यथाय।।
प्रेमार्पण, समदरशन, जगजन-दुखजाय।।८।।

नमो नमो प्रभु वाक्य-मनातीत मनोवचनैकाधार।।
ज्योतिर ज्योति, उजल हृदिकन्दर तुमि तमभंजनहार।।९।।

धे धे धे लंग रंग भंग, बाजे अंग संग मृदंग।।
गाइछे छन्द भकतवृन्द, आरति तोमार।।१०।।

जय जय आरति तोमार।
हर हर आरित तोमार।
शिव शिव आरति तोमार।।

सन्ध्यास्तोत्र – अर्थ
श्रीरामकृष्णदेव की आरती

हे भवबन्धन का खण्डन करनेवाले, जगत् के वन्दनीय, मैं तुम्हारी वन्दना करता हूँ, तुम निरंजन हो, नर-रूप धारण किये हो, निर्गुण होकर भी गुणमय हो।।१।।

तुम मनुष्य को दूषित करनेवाले पाप से मुक्त करते हो, जगत् के भूषणरूपी हो, ज्ञानस्वरूप हो, ज्ञानरूपी अंजन से तुम्हारे नेत्र विशुद्ध है, तुम्हें देखने से ही मोह दूर भाग जाता है।।२।।

तुम ज्ञानमय भाव-समुद्र हो, सदा मतवाले प्रेममहावारिधि हो, तुम्हारे जो चरणयुगल भवसागर के पार उतार देते हैं वे भक्तों द्वारा ही प्राप्त करने योग्य है।।३।।

तुम युगावतार के रूप में प्रकट हुए हो, जगदीश्वर हो, योग के सहायक हो; तुम्हारी कृपा से देखता हूँ-मेरी इन्द्रियाँ निरूद्ध और मन समाधिमग्न हुआ है।।४।।

तुमने दुःख के उत्पातों को दूर किया है, तुम दया की मूर्ति हो और दृढ़ कर्मवीर हो, तुमने जगत् के उद्धार के लिए अपने प्राणों का अर्पण कर दिया है, कलियुग के बन्धनों को छिन्न कर दिया है।।५।।

तुमने कामिनी और कांचन को छोड़ा है और इन्द्रियों के आकर्षणों को बहुत ही तुच्छ माना है; हे त्यागीश्वर, हे नरवर, मुझे श्रीचरणों में प्रेम दो।।६।।

तुम भयरहित हो, तुममें कोई सन्देह नहीं रहा, तुम दृढ़ निश्चय तथा उदार चित्त वाले हो, तुम जाति या कुल का विचार न करके अकारण ही भक्तों को शरण देते हो।।७।।

तुम्हारे चरणकमल ही मेरी सम्पत्ति है जिनकी तुलना में यह संसार गोखुर में आनेवाले जल जैसा है; तुम प्रेम के दाता हो, समदर्शी हो, तुम्हारे दर्शन से जगत्-निवासियों के सभी दुःख दूर होते है।।८।।

वाणी व मन से परे होकर भी वाणी और मन के एकमात्र आधाररूपी हे प्रभो ! तुम्हें बारम्बार नमस्कार ! तुम ज्योति की भी ज्योति हो, हृदयरूपी गुफा में उजाला करनेवाले तथा अज्ञानरूपी अन्धकार को दूर करने वाले हो।।९।।

भक्तगण छन्द में तुम्हारी आरती का संगीत गा रहे है, जिसमें धे धे धे लंग रंग भंग रव से, अंगों के साथ साथ मृदंग बज रहा हैं।।१०।।

तुम्हारी आरती की जय हो,
तुम्हारी आरती पापों का हरण करनेवाली
तथा परमकल्याणदायिनी है।

श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्

ॐह्रीं ऋतं त्वमचलो गुणजिद् गुणेड्यो
नक्तन्दिवं सकरूणं तव पादपद्मम्
मोहङ्कषं बहुकृतं न भजे यतोऽहं
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो।।१।।

भक्तिर्भगश्च भजनं भवभेदकारी
गच्छन्त्यलं सुविपुलं गमनाय तत्त्वम्
वक्त्रोद्धृतं तु हृदि मे न च भाति किञ्चित्
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो।।२।।

तेजस्तरन्ति तरसा त्वयि तृप्ततृष्णा
रागे कृते ऋतपथे त्वयि रामकृष्णे
मृर्त्यामृतं तव पदं मरणोर्मिनाशं
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो।।३।।

कृत्यं करोति कलुषं कुहकान्तकारि
ष्णान्तं शिवं सुविमलं तव नाम नाथ

यस्मादहं त्वशरणो जगदेकगम्य
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो।।४।।

ॐ स्थापकाय च धर्मस्य सर्वधर्मस्वरूपिणे।
अवतारवरिष्ठाय रामकृष्णाय नमो नमः।।
ॐ नमः श्रीभगवते रामकृष्णाय नमो नमः।

श्रीरामकृष्ण–स्तोत्र – अर्थ

ॐ ह्रीं, तुम सत्य, अचल, त्रिगुणजयी और दिव्य गुणसमूहों के लिए स्तव के योग्य हो ! मैं तुम्हारे मोहविनाशक पूजनीय चरणकमलों का व्याकुल भाव से दिनरात भजन नहीं करता, इसीलिए हे दीनबन्धो, तुम्हीं मेरे आश्रय हो।।१।।

संसारविनाशी भक्ति–वैराग्यादि और उपासना की सहायता से मनुष्य अति महान ब्रह्मतत्त्व तक पहुँचने में समर्थ होता है, किन्तु इस तरह के वाक्य मेरे मुख से उच्चारित होते हुए भी हृदय में कुछ भी आभास नहीं होता, इसीलिए हे दीनबन्धो, तुम्हीं मेरे आश्रय हो।।२।।

हे रामकृष्ण, सत्य के पथस्वरूप, तुम पर अनुराग होने से मनुष्य तुम्हीं को पाकर पूर्णकाम होता है, और शीघ्र रजोगुण से पार हो जाता है। मृत्युरूप तरंग के विनाशकारी तुम्हारे युगलचरण मर्त्य जगत् में अमृत–स्वरूप हैं, इसीलिए हे दीनबन्धो, तुम्हीं मेरे आश्रय हो।।३।।

हे नाथ, तुम्हारा मायासंहारी, मंगलमय, अतिपवित्र, 'ष्ण' अक्षर में अन्त होनेवाला (रामकृष्ण) नाम पाप को भी पुण्य में परिणत कर देता है; तुम जगत के एकमात्र आश्रय हो; चूंकि मैं निराश्रय हूँ, इसीलिए हे दीनबन्धो, तुम्हीं मेरे आश्रय हो।।४।।

धर्म के प्रतिष्ठाता एवं सर्वधर्मस्वरूप, सब अवतारों में श्रेष्ठ हे रामकृष्ण, तुम्हें प्रणाम है।

ॐ श्रीभगवान् रामकृष्ण को बारम्बार प्रणाम है।

देवी प्रणामः

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सवार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ १॥
सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि ।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते॥ २॥
शरणागतदीनार्त परित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ ३॥

जय नारायणि नमोऽस्तु ते,
जय नारायणि नमोऽस्तु ते।
जय नारायणि नमोऽस्तु ते,
जय नारायणि नमोऽस्तु ते।।

देवी–प्रणाम – अर्थ

हे सर्व मगंलों की मांगल्य-विधायिनी शिवे, हे सकल अभीष्टदायिनी गौरि, सब की शरण हे त्रिनयने, हे नारायणि, तुझे नमस्कार है।।१।।

सृष्टि, स्थिति और विनाश की शक्तिभूता हे सनातनि, गुणो की आश्रय-स्वरूपा हे गुणमयि, नारायणि, तुझे नमस्कार है।।२।।

शरण में आये हुए दीनों और आर्तो के परित्राण में रत रहनेवाली, सब दुःखों का हरण करनेवाली हे देवी, हे नारायणि, तुझे नमस्कार है।।३।।

हे नारायणि, तेरी जय हो, तुझे बारम्बार नमस्कार है।
जय श्री महामाई की जय।
जय भगवान श्रीरामकृष्णदेव की जय।
जय स्वामीजी महाराज की जय।

श्रीमत् स्वामी गहनानन्दजी महाराज की जीवनी

महाराजजी का जन्म ४ अक्तूबर, १९१६ ई. को सिलहट जिले (अब बांगलादेश में) मे पहाड़पुर गाँव में हुआ था। अपने छात्र-जीवन में ही उन्होंनें श्रीरामकृष्ण तथा स्वामी विवेकानन्द की जीवनी तथा उपदेशों का अध्ययन किया और उनके प्रति तीव्र आकर्षण का अनुभव किया। वे रामकृष्ण संघ के कुछ संन्यासियों के समर्पित जीवन से भी काफी प्रभावित हुए थे, विशेषकर ब्रह्मलीन स्वामी प्रभानन्दजी (केतकी महाराज) से, जो उनके पूर्वाश्रम के रिश्ते में भाई भी लगते थे। एक बार वे श्रीरामकृष्ण के अन्तरंग शिष्य स्वामी अभेदानन्द जी से भी मिल चुके थे।

जनवरी १९३९ में २२ साल की आयु में महाराज ने रामकृष्ण संघ के भुवनेश्वर केन्द्र में प्रवेश लिया और दो माह बाद संघ के तत्कालीन अध्यक्ष स्वामी विरजानन्दजी महाराज से मंत्र दीक्षा प्राप्त की। १९४४ ई. में स्वामी विरजानन्दजी महाराज ने ब्रह्मचर्य की दीक्षा प्रदान की और अमृत चैतन्य नाम दिया; तदुपरान्त १९४८ ई. में उन्हें संन्यास-दीक्षा और गहनानन्द नाम प्रदान किया।

भुवनेश्वर में उन्होंने स्वामी निर्वाणानन्द जी महाराज (जो बाद में संघ के उपाध्यक्ष हुए थे) के प्रेरक मार्गदर्शन में कार्य किया। स्वामी शंकरानन्द जी (बाद में संघ के ७वें अध्यक्ष) स्वामी अचलानन्द जी (स्वामी विवेकानन्द जी के एक शिष्य तथा संघ के उपाध्यक्ष) के भुवनेश्वर तथा पुरी आने पर महाराज को उनकी सेवा करने का सौभाग्य भी मिला था। १९४२ से १९५२ तक उन्होंने मायावती के अद्वैत आश्रम की कोलकाता शाखा में सेवा दी। इन १० वर्षों मे दौरान दो बार वे निर्जन में अध्ययन तथा साधना हेतु हिमालय में स्थित मायावती आश्रम गये।

१९५३ से १९५८ तक वे शिलांग केन्द्र में रहे, जहाँ उन्होंने (स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज के शिष्य) स्वामी सौम्यानन्द जी के मार्गदर्शन में कार्य किया। इस काल के दौरान उन्होंने असम में दो बार बाढ़-राहत-कार्य का भी परिचालन किया। स्वामी गहनानन्द जी की रोगी तथा पीड़ित मानवता की सेवा में विशेष रुचि थी और १९५८ ई. उनकी मिशन के अस्पताल रामकृष्ण मिशन सेवा प्रतिष्ठान में नियुक्ति की गयी। २७ वर्षों के सुदीर्घ काल तक वे इसकी समस्त गतिविधियों के साथ गहराई से जुड़े रहे - प्रथम ५ वर्ष तक वे उप-सचिव के रूप में उसके संस्थापक सचिव स्वामी दयानन्द जी के प्रेरणादायी निर्देशन में और तदुपरान्त १९८५ तक के २२ वर्षों तक इसे प्रमुख के रूप में।

सेवा-प्रतिष्ठान मूलतः एक आदर्श प्रसूति-गृह तथा शिशु-मंगल-केन्द्र के रूप में शुरू किया गया था और कुछ वर्षों तक उसी रूप में सुपरिचित था। परवर्ती काल में इसने जो बृहत् तथा बहुमुखी रूप धारण किया, वह मुख्यतः स्वामी गहनानन्दजी महाराज के कार्यकाल के दौरान ही हुआ। उन्होंने समाज के निर्धन तथा अल्प आय वर्ग के अधिकाधिक लोगों की चिकित्सकीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इसकी सेवाओं के विकास तथा विस्तार हेतु अथक परिश्रम किया। वहाँ निवास के दौरान, उन्होंने चल-चिकित्सा-इकाइयों के माध्यम से दूर के ३३ गाँवों में नेत्रों के मुफ्त ऑपरेशन के लिए कैम्प, प्रतिवर्ष गंगासागर मेला के तीर्थ-यात्रियों के लिए चिकित्सा-सेवा और बंगलादेश के मुक्ति-युद्ध के दौरान शरणार्थियों के लिए राहत-कार्य की व्यवस्था की।

१९६५ ई. में वे रामकृष्ण मठ के ट्रस्टी और रामकृष्ण मिशन की संचालन-समिति के सदस्य निर्वाचित हुए। १९७९ में वे इन दोनों संस्थाओं के सह-सचिव नियुक्त हुए। इसके बाद भी वे मार्च १९८५ तक सेवा-प्रतिष्ठान के सचिव का उत्तरदायित्व निभाते रहे। इसके बाद वे पूर्णकालिक सह-सचिव में रूप में बेलूड़ मठ मुख्यालय में चले आये। १९८९ में वे मठ तथा मिशन के

महासचिव बने और तीन वर्षो तक उसी पद पर बने रहने के बाद १४ अप्रैल, १९९२ में महाराज को संघ का उपाध्यक्ष चुना गया। इसके बाद ही उसी उसय से वे काकुड़गाछी, कोलकाता के रामकृष्ण मठ (योगोद्यान) के भी अध्यक्ष थे। तदुपरान्त २५ मई, २००५ से रामकृष्ण मठ, बेलूड़ मठ के ट्रस्टी मण्डल तथा मिशन की कार्यकारी समिति ने उन्हें संघ का १४वाँ अध्यक्ष चुना था।

मठ तथा मिशन के उपाध्यक्ष के रूप में स्वामी गहनानन्द जी ने भारत के विभिन्न अंचलों की यात्रा की और संघ के अनेक केन्द्रों तथा बहुत-से असंलग्न केन्द्रों में पदार्पण किया। १९९३ ई. में शिकागो में विश्वधर्म-महासभा कौंसिल द्वारा स्वामी विवेकानन्द के धर्म-महासभा में भाग लेने की ऐतिहासिक घटना की शताब्दी मनाने हेतु आयोजित समारोह (जिसमें दुनिया के विभिन्न अंचलों के ६५०० लोगों ने भाग लिया था) में रामकृष्ण संघ का प्रतिनिधित्व किया। उस दौरान उन्होंनें संघ के अमेरिका तथा कनाडा स्थित केन्द्रों का परिदर्शन किया। उन्होंने विभिन्न अवसरों पर इंग्लैंड, फ्रांस, स्विटजरलैंड, हालैंड, आस्ट्रेलिया, जापान, म्यांमार, श्रीलंका, बंगलादेश, सिंगापुर, मलेशिया तथा मारीशस के विभिन्न स्थानों का भी दौरा किया।

इन स्थानों पर उन्होंने श्रीरामकृष्ण, श्री सारदादेवी तथा स्वामी विवेकानन्द के सन्देश का प्रचार किया और हजारों साधकों को मंत्र दीक्षा प्रदान की। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत कठिनाइयों तथा असुविधाओं पर ध्यान न देते हुए देश के सभी अंचलों से, यहाँ तक कि अति दूर स्थित गाँवों से भी आध्यात्मिक निर्देश के लिए प्राप्त हुए अनुरोधों को स्वीकार किया और वहाँ पदार्पण करके जिज्ञासुओं को मंत्र दीक्षा प्रदान की तथा सभी लोगों को शान्ति तथा मुक्ति की उपलब्धि हेतु आध्यात्म्कि जीवन में मागदर्शन किया।

गिरते स्वास्थय के कारण ४ सितम्बर २००७ को उन्हें चिकित्सा हेतु कोलकाता के रामकृष्ण मिशन सेवा प्रतिष्ठान में भर्ती कराया गया था। उत्कृष्ट चिकित्सा की व्यवस्था उपलब्ध कराने के

बावजूद उनकी अवस्था बिगड़ती गई और वहीं ४ नवम्बर को दोपहर उपरान्त ५.३५ बजे अन्तिम सांस ली।

(सौजन्य - विवेक ज्योति, मासिक रायपुर के दिसम्बर २००६ के अंक से साभार गृहित)

गुरु कृपा – प्रार्थना

पूज्य स्वामी वरेश्वरानन्द (देबू महाराज), रामकृष्ण मिशन, लखनऊ

१

आन्तरिक इच्छा रहने और समय होने पर ही,
साधक को मिलता है सद्‌गुरु का सन्धान।
कभी कभी बिन माँगे अयाचित का भी,
करते हैं जीवन धन्य सद्‌गुरु कृपा निधान।।

२

गुरु और इष्ट दोनों को एक मान कर ही,
साधक करता है दिव्य साधन।
गुरुकृपा का प्रसाद मिलता है तभी,
होता है जब व्याकुल एकाग्र यह मन।।

३

जैसे हजार सालों से अन्धकारमय घर में
जब कभी आता है दिव्य–प्रकाश।
एक ही क्षण में भाग जाता है,
घुप अन्धकार की लीला का यह नित्य आभास।।

४

आ जाती है ईश्वर कृपा जीवन में अनायास ही,
जन्मों से ढका अज्ञानावरण दूर हो जाता है बहुत बार
न समझो इसे कोई हुआ जादू या चमत्कार
था यह तो साधक के जीवन में पूर्व में सुकृत कर्म और संस्कार।।

५

याद करो उस शिष्य एकलव्य की
प्रगाढ़ एकनिष्ठा और पुरस्कृत गुरुभक्ति की कथा।
बना गुरुमूर्ति द्रोणाचार्य की
छुप कर ही सीख डाली अस्त्र चलाने की समस्त विद्या।।

६
शिष्य पर आविर्भूत होती है ईश्वरकृपा,
उपस्थित श्री गुरु देह के माध्यम से।
होता सार्थक उसका ही साधक जीवन
करता एकाग्र चित्त हो निरन्तर गुरु प्रदत्त मन्त्र जप से।।

७
संसार में तो लगा पड़ा है
अनेक दुख-कष्ट और सब बाधा-विघ्न ।
एकमात्र श्रीगुरु की कृपा से ही
शिष्य हो जाता है इन सब में शान्त, धीर और उत्तीर्ण।।

८
बहुत बार ही तो हे साधक नहीं मिलता है
साथ ही साथ आध्यात्मिकता का फल।
निष्ठा के साथ करते जाओ तुम, श्री गुरु के आदेश का पालन,
देखोगे और अचम्भित से
तुम हो रहे हो आत्म-सन्धान में सफल।।

९
क्या उनको नहीं करना पड़ता देह-धारण
और कठोर जप-तप और साधन,
उनकी तो इच्छा मात्र से ही,
हो जाता है साधक के संसार बंधन का मोचन।।

१०
जब भी शिष्यों की उन्नति हेतु
करें श्रीगुरुदेव देह का लीला संवरण।
देखो देखो वे और कहाँ
विस्तृत इस जगत में मुस्कुरा रहे
औढ़े शिष्यों के हृदय में इष्ट स्वरूप का आवरण।।

११

जपात सिद्धि, जपात सिद्धि, जपात सिद्धि
बस गरुदत्त मन्त्र जपते चलो,
न आ पड़े जब तक जीवन का अन्तिम दिन।
आश्वासन वाणी है उनकी यही
देंगे दर्शन पकड़ हाथ ले चलेंगे श्रीगुरुदेव
उस गन्तव्य की ओर
जहाँ होगा इष्ट में अपना सर्वस्व लीन।।

१२

चरैवेति, चरैवेति, चरैवेति
ऐसे ही चलते जाना हे साधक,
मन्त्र साधन या शरीर पतन
श्री गुरु रूप में ईश्वर की यही लीला,
करलो सार्थक हे साधक बहुमूल्य यह जीवन

१३

अपेक्षा में बैठे भगवान श्री रामकृष्ण
श्रीगुरु रूप में देखा तुमने हुआ जब मिलन
धन्य, धन्य, धन्य हे महामानव,
अब ले लो चरणों में नित्य प्रति प्रणति हमारी
अपने ही कार्य में लगा लो
मेरा यह प्राण और तन-मन

बंगला से हिन्दी में इस कविता का भावानुवाद स्वामी तत्परानन्दजी ने किया है।

परम पूज्यपाद श्रीमत् स्वामी विरजानन्दजी महाराज के पत्रों का संकलन



रामकृष्ण मठ एवं मिशन के छठे संघाध्यक्ष ब्रह्मलीन पूज्यपाद स्वामी विरजानन्दजी महाराज द्वारा चतुर्दश संघाध्यक्ष ब्रह्मलीन पूज्यपाद स्वामी गहनानन्दजी महाराज (नरेशरंजन महाराज) को लिखे गए कुछ पत्र, जिनका प्रकाशन, उन पर बंगला भाषा में छपे ग्रन्थ 'स्वामी गहनानन्द - एक उत्सर्गित जीवन' में हुआ था, इन्हीं का हिन्दी-अनुवाद स्वामी तत्परानन्दजी ने सौहार्द 'गहन आनन्द चिन्तन' ग्रन्थ के लिए किया।



।। १।।

श्रीश्रीगुरुदेव श्रीचरण भरोसा

The Vivekananda Ashram
Shyamlatal P. Sukhidhang
Via Tanakpur (Almora) U.P.
20.08.39

श्रीमान नरेशरंजन,

तुम्हारा ३० जुलाई को लिखा पत्र पाकर मुझे प्रसन्नता हुई। तुम्हारे जप-ध्यान की विधि ठीक-ठाक ही चल रही है। इसके

अतिरिक्त अन्य पूजा-अनुष्ठान इत्यादि जो कर रहे हो, ठीक वैसे ही चलने दो। जप की संख्या जैसे चल रही है वैसे ही चलने दो, इतना जोर-जबरदस्ती करके नियम बना कर करने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी जितना व्यवहारिक हो उतनी संख्या में जप करना ही अच्छा है। यह बहुत ही अच्छा है कि तुम अपने कार्यों के बीच में प्रभु का स्मरण-मनन करने की चेष्टा कर रहे हो। अपनी शक्ति-सामर्थ्य के अनुसार जितना कर सको, सब कुछ ही करो परन्तु ज्यादा उतावला नहीं होना। सर्वदा उनके निकट प्रार्थना करना जिससे उनके ऊपर अपार प्रेम आ जाए। भगवान को प्रेम कर पाने का ही वास्तविक प्रेम है। नियम, पूजा-अनुष्ठान इत्यादि साधन उसके मात्र सहायक अंग ही हैं। बाकि सब कार्यों के मध्य अवकाश रहने पर शिवमन्त्र या शक्ति मन्त्र में से जो जप करना अच्छा लगे उसे करना और ऐसा करने में कोई प्रत्यवाय/पाप नहीं होगा।

यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई कि तुम तीन महीनों तक केदार बाबा की सेवा कर पाए। पुराने साधुओं की सेवा करने से तन-मन पवित्र होता है। तुम सौभाग्यशाली हो जो इस प्रकार साधु-सेवा का अवसर तुमको मिला।

उधर मठ के नियमित कार्यों, स्वाध्याय और ध्यान-जप आदि लेकर आनन्द में रह सको, यही श्रीश्री ठाकुर के पास मेरी प्रार्थना है, अन्य कोई चिन्ता अपने मन में न लाना। तुम श्रीश्री ठाकुर के आश्रय में हो। यही जान लो कि वे तुम्हारे जीवन पर अपनी अनवरत कृपा-दृष्टि बनाए हुए हैं।

मेरा स्वास्थ्य बस एक प्रकार से चल ही रहा है। मेरा स्नेह और आशीर्वाद। वहाँ मठ में सभी को मेरा स्नेह और शुभेच्छा बताना। मेरा स्वास्थ्य एक प्रकार से अच्छा ही है। इति-

शुभानुध्यायी
विरजानन्द



।। २।।

श्रीश्रीगुरुदेव
श्रीचरण भरोसा

RAMAKRISHNA MATH
P.O. BELUR MATH,
DT. HOWRAH
9.1.1940

PHONE : HOWRAH 391

श्रीमान नरेश,

२४ दिसम्बर का तुम्हारा पत्र पाकर खुशी मिली। मेरे भ्रमण के समय मे तुम्हारा और एक पत्र मिला था। मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता है कि तुम मेरे बताए अनुसार जप कर रहे हो और यथासाध्य शास्त्रादि और स्वामीजी की पुस्तकें पढ़ रहे हो।

शरीर-स्वास्थ्य अच्छा न रहने पर प्राणायामादि करने की आवश्यकता नहीं है। मैं अभी भी मठ में तीन महिनों तक और रहूँगा। तुम अपनी सुविधा होने पर यहाँ आकर मुझसे मिल सकते हो और अपने सभी सन्देहों और संशयों को मेरे सामने सुलझा सकते हो। जब बार-बार तुम्हारे मन में संशय, परेशानी का कारण बनता जा रहा हो तो आमने-सामने बैठ कर तुम बेझिझक मुझसे उन पर विचार कर उनका निवारण कर लो, यही तुम्हारे लिए अच्छा रहेगा।

तुम्हें वहाँ बहुत प्रकार के कार्यों में व्यस्त रहना पड़ रहा है, ऐसा सोचकर अपने मन में किसी प्रकार कष्ट को स्थान न दो। श्रीश्री ठाकुरजी का कार्य उनके प्रति प्रेम पाने के लिए ही कर रहे हो, बस इसी भाव का पोषण कर कार्य करते चलो। देखोगे कि उससे तुम्हारे मन में कोई विक्षेप का भाव नहीं आएगा और परम आनन्द एवं शान्ति का लाभ होगा। कार्यों में व्यस्तता रहने पर शरीर-मन की बहुत ही अच्छा प्रशिक्षण हो जाता है और उससे ही जप-ध्यान करने का सामर्थ्य भी बढ़ता है। अन्यथा तामसिक शरीर से जप-ध्यान हो पाना असम्भव होता है। अतएव इन सब कार्यों के द्वारा तुम्हारी कोई भी क्षति नहीं हो सकती, यही जानो, और इससे तुम्हारा कल्याण-साधन ही होगा।

केदारबाबा तुम्हें पत्रादि लिखते रहते हैं और उन्होंने उपहार स्वरूप तुम्हें दो पुस्तकें भी भेंट की हैं, यह जानकर मुझे आनन्द अनुभव हुआ है। साधुसंग और साधुओं के आशीर्वाद का भागी होना तुम्हारे लिए बड़े सौभाग्य की बात है। इस अवसर का सद्व्यवहार कर अपना जीवन धन्य करो।

श्रीश्री ठाकुर से मेरी प्रार्थना है कि वे तुम्हें दिन-दिन और शुद्ध, पवित्र और भक्तिमान करें।

मेरा स्नेहाशीर्वाद। इति-

शुभाकांक्षी
विरजानन्द



।।३।।

श्रीश्रीगुरुदेव
श्रीचरणभरोसा

THE RAMAKRISHNA MISSION
HOUSE
KURSEONG (Darjeeling),
Pankhabari Road.
25.5.40

श्रीमान नरेश,

तुम्हारी चिट्ठी मिलने से मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। तुम आश्रम के विभिन्न कार्यों में व्यस्त रहने के कारण मुझे पत्र नहीं लिख पाए, ऐसा सोचकर मेरे मन में तुम्हारे प्रति कोई असन्तोष नहीं है। मुझे यह पता है कि तुम्हें नानाविध कार्यों में व्यस्त रहना पड़ता है। यहाँ आने पर मेरा स्वास्थ्य शनैः शनैः उन्नति लाभ कर रहा है। किन्तु ज्वर अभी भी प्रतिदिन ही आ रहा है। पर लगता है कुछ दिन यहाँ रहने पर यह भी चला जाएगा। सब तो श्रीश्री ठाकुरजी की इच्छा पर ही निर्भर है।

दुःख की बात है कि तुम्हारा शरीर-स्वास्थ्य अच्छा नहीं चल रहा है। अपने शरीर-स्वास्थ्य का यथा-साध्य ध्यान रखो, इस आयु में इसके बिगड़ जाने पर साधुजीवन बड़ा ही कष्ट-साध्य हो जाता है।

यह परम हर्ष का विषय है कि तुम अपने जप-ध्यान के विषय में उठने वाले संशयों से मुक्त हो गए हो। सर्वदा स्वयं को दोषी मानना, अच्छा नहीं होता। भला तुम क्यों दोषी होओगे ? तुम तो उनकी सन्तान हो। स्वयं पर ऐसा ही दृढ़-विश्वास रखो। उनकी कृपा से भक्ति-विश्वास, ज्ञान-वैराग्य लाभ कर जीवन धन्य हो जाऐगा। मेरा स्नेहाशीर्वाद जानो। आश्रम के सभी साधु-ब्रह्मचारीगणों को मेरी शुभेच्छादि बताना। इति -

शुभानुध्यायी
विरजानन्द



||४||

श्रीश्रीगुरुदेव
श्रीचरणभरोसा

Sreebas Cottage
Kalimpong
25.7.40

श्रीमान नरेश,

तुम्हारा १२ जुलाई का पत्र मिलने पर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं १८ तारिख को यहाँ पहुँचा। कुछ दिनों से काफी अच्छा स्वास्थ्य चल रहा था। ज्वर ९८.२ सेल्शियस तक कम हो गया था, पर फिर से पहले जैसे ही बढ़ने लगा है।शायद कुछ दिन बाद फिर कम हो जाए। कारसियांग में मोड़ पर स्थित स्थान से यहाँ पर स्वास्थ्य अधिक अनुकूल अनुभव हो रहा है। अगस्त तक यहाँ रहकर श्यामलाताल जाने की बात है।

यह सुनकर मन बहुत ही दुखित होता है कि तुम्हारा स्वास्थ्य बीच-बीच में अच्छा नहीं चल रहा है। सूर्य महाराज (स्वामी निर्वाणानन्द) यदि तुम्हारे स्थान परिवर्तन की कोई व्यवस्था करें तो हो सकता है तुम्हें उत्तम स्वास्थ्य लाभ हो पायेगा। वे जैसी व्यवस्था करें उसी प्रकार चलो।

मेरा स्नेहाशीर्वाद जानो।

इति-

शुभानुध्यायी
विरजानन्द

पुनश्चः- निष्ठा के साथ अच्छे से जप-ध्यान-प्रार्थना करो, श्रीश्री ठाकुर निश्चय ही कृपा करेंगे और तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करेंगे।

इति



॥५॥

श्रीश्रीगुरुदेव
श्रीचरणभरोसा

THE VIVEKANANDA ASHRAMA
SHYAMLATAL,
P.O. SUKHIDHAN, VIA TANAKPUR,
DT. ALMORA. U.P.
2.9.1940

श्रीमान नरेश,

तुम्हारी दो चिट्ठियाँ प्राप्त हुईं। मैं १ से ११ सितम्बर तक बेलूड़ मठ में ही था। उसके पश्चात काशी में दो दिन एवं लखनऊ में

१५ घण्टा रुक कर १५ तारीख की शाम यहाँ सकुशल पहुँच गया।यहाँ आने के बाद से शरीर-स्वास्थ्य अच्छा ही अनुभव हो रहा है। ज्वर का तापमान ९८.३ से ९८.६ तक ही उठता है। बाकि सब मेडिकल-परीक्षणों का फल भी पहले से न्यूनतम ही है। आशा है तीन महीने यहाँ रहने पर यह अस्वस्थता पूर्णतः ही समाप्त हो जायेगी। चिन्ता की कोई बात ही नहीं है।

मुझे आशा है तुम्हारा शरीर-स्वास्थ्य पहले से अच्छा हो रहा है। मेरा स्नेहाशीर्वाद जानो। आश्रम मे सभी को मेरा स्नेह और शुभेच्छा देना। इति-

शुभानुध्यायी
विरजानन्द



।।६।।

श्रीश्रीगुरुदेव
श्रीचरणभरोसा

VIVEKANANDA ASHRAMA
SHYAMLATAL
SUKHIDHANG P.O.
(ALMORA) U.P.

'विजया', 'बंगाब्द', १३४७

श्रीमान नरेश,

'विजयोत्सव' के उपलक्ष में तुम मेरा सादर सम्भाषण, प्रेम और स्नेहाशीर्वाद जानो। तुम्हारा ६ तारीख का पत्र पाकर मुझे प्रसन्नता हुई। मेरे शरीर-स्वास्थ्य में क्रमशः उन्नति हो रही है। आशा है कि नवम्बर पर्यन्त यहाँ रहने के फलस्वरूप स्वास्थ्य में उन्नति होगी, चिन्ता करने जैसा कोई संवाद नहीं है।

तुमने पत्र में जिन भावों का प्रकाश किया है वह ठीक ही है। मेरी प्रार्थना है कि इसी प्रकार निष्ठा और विश्वास का भाव तुम्हारे अन्तर में दृढ़ता के साथ प्रतिष्ठित हो। मेरा आशीर्वाद सर्वदा तुम्हारे ऊपर है। ऐसा ही जानो। इति-

शुभानुध्यायी
विरजानन्द



।।७।।

श्रीश्रीगुरुदेव
श्रीचरणभरोसा

THE VIVEKANANDA ASHRAMA
SHYAMLATAL
P.O. SUKHIDHAN, VIA TANAKPUR,
ALMORA U.P.

9.12.1940

श्रीमान नरेश,

तुम्हारी चिट्ठी मिलने से प्रसन्नता हुई। यहाँ तीन महिने रहने के फलस्वरूप मेरे शरीर को काफी विश्राम तो मिला है पर रोग का निदान पूरी तरह से नहीं हो पाया। ज्वर और दुर्बलता ने शरीर में स्थान ही बना लिया है।

११ तारीख को यहाँ से रवाना हो रहा हूँ। विभिन्न स्थानों पर प्रवास करते हुए १६ को बेलूड़ मठ पहुँचूंगा। मठ पहुँच कर अन्य कोई चिकित्सा की व्यवस्था करनी होगी। जो भी हो चिन्ता का कोई कारण नहीं है।

साधन-जीवन में अनवरत आनन्द-लाभ बहुत दूर की ही बात है, उठना और गिरना तो लगा ही पड़ा है। इन सब से किसी प्रकार का भय नहीं करना है। धैर्य का धारण कर नियमित जपध्यानादि करने में किसी प्रकार की उदासीनता और आलस्य को स्थान न दो। खानदानी किसान की तरह लगे रहना पड़ता है, तुम्हें क्या मिल रहा है और क्या नहीं, इसकी ओर ध्यान न दो।

ध्यान के सम्पर्क में तुम्हारे मन में जो नया भाव उत्पन्न हो रहा है, उसे कर सकते हो। इष्ट-स्वरूप चिन्तन के समय इसी प्रकार ध्यान करना, फिर भी तुम्हे जैसा मैंनें बताया है वैसा करते रहना।

एक-एक भाव को लेकर लगे रहना पड़ता है। जब जैसा भाव मन में प्रकट हो, उसे ही करना होगा इसका कोई औचित्य नहीं

है। गुरुदेव के दिशा-निर्देश ही साधन-पथ पर एकमात्र अनुकरणीय हैं। इन निर्देशों को ही शिरोधार्य कर चलने पर कभी भी पथ-च्युत होने की आशंका नहीं रहती। फिर भी तुमने जिस भाव की बात लिखी है उसे करने में कोई बाधा नहीं है। उसमें मेरी सहमति है।

यह साधन-पथ कोई विद्यालयीन अध्ययन जैसा नहीं है, प्रति वर्ष एक कक्षा से दूसरी कक्षा में प्रमोशन होता जायेगा और नई पुस्तकें पुरानी का स्थान लेती रहेंगी। जब तक प्राप्त साधन की अनुभूति न हो जाए, आजीवन उस एक ही भाव का आश्रय लेकर लगे रहना पड़ता है।

मेरा स्नेहाशीर्वाद जानो। इति-

शुभानुध्यायी
विरजानन्द





॥८॥

श्रीश्रीगुरुदेव
श्रीचरणभरोसा

THE VIVEKANANDA ASHRAMA
SHYAMLATAL
P.O. SUKHIDHAN,
VIA TANAKPUR, ALMORA U.P.
2.7.1941

श्रीमान नरेश,

तुम्हारी चिट्ठी मिलने से प्रसन्नता हुई। मेरा शरीर अभी भी अत्यन्त अस्वस्थ ही चल रहा है। बीच में लीवर कुछ ठीक हुआ था पर फिर से अस्वस्थ हो रहा है। ज्वर में तापमान ९८.८ से ९९.४ डिग्री सेल्शियस तक बढ़ जाता है। हृदय में भी अस्वस्थता

अनुभव होने लगी है। चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है, श्रीश्री ठाकुरजी की जो इच्छा रहेगी, वही होगा। रेचक जैसी कुछ सामान्य औषधियों का ही सेवन कर रहा हूँ। ज्यादातर दोपहर में झोल (रोगियों हेतु विभिन्न सब्जियों को उबाल कर बिना तेज मसाले से बनायी गयी चावल के साथ खाने योग्य किन्तु स्वादिष्ट बंगाली तरकारी) और भात और रात्रि में सामान्य रोटी ही अब इस शरीर का सम्बल है।

तुम्हारे ऊपर बहुत कार्यों का भार आ पड़ा है, तो इसे छोड़ और क्या करोगे ? श्रीश्रीठाकुर जब जिस अवस्था में रखें उसी में रहकर ही सन्तुष्ट रहना उचित है। किसी अवस्था में विचलित और विरक्त न होकर प्राप्त कर्त्तव्य को श्रीश्रीठाकुर की सेवाज्ञान से सुसम्पन्न कर सकने पर वही भजन के समतुल्य हो जाता है। चित्तशुद्ध हो जाता है। इससे चरित्र गठित होगा एवं श्रीश्रीठाकुर तुम्हारे उपर प्रसन्न होंगे। काम के साथ-साथ यथा-साध्य ध्यान जप और स्वाध्यायादि का अभ्यास करते रहो। तुम मेरा आन्तरिक स्नेहाशीर्वाद जानो, मठ में बलाई और सभी अन्यों को भी मेरा प्रेम और शुभेच्छा देना। श्रीश्रीठाकुर के श्रीचरणों में तुम्हें दिन-ब-दिन अचल निष्ठा, रतिमति और श्रद्धा-भक्ति-विश्वास की प्राप्ति हो तुम्हारे लिए मैं यही प्रार्थना करता रहता हूँ।यहाँ विमल, गौर और पंचानन जो मेरे साथ रहते हैं, तुम्हें अपना स्नेहादि प्रेषित कर रहे हैं।

मुझे और पत्र लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है। मेरे इस दुर्बल अस्वस्थ शरीर से अधिक चिट्ठियों का उत्तर देने में कष्ट होता है। मेरे बारे में और भी लोगों से जानकारी तो मिल ही जाती होगी। पत्र न लिख पाने पर भी मेरा स्नेहाशीर्वाद सर्वदा ही तुम्हारे उपर है। इति-

शुभानुध्यायी

विरजानन्द



॥६॥

श्रीश्रीदुर्गा
शरणम्

THE VIVEKANANDA ASHRAMA
SHYAMLATAL
P.O. SUKHIDHAN, VIA TANAKPUR
ALMORA U.P.
VIJAYA 1348 (Bengali Year)

श्रीमान नरेश,

तुम्हारा विजया-पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। तुम भी मेरी ओर से विजया का सादर सम्भाषण और स्नेहाशीर्वाद जानो और अन्य सभी को भी बताओ। मेरा शरीर अभी तक पूर्णतया स्वस्थ नहीं हो पाया है फिर भी चिन्ता की कोई बात नहीं है। आशा है कि तुम सभी कुशल से होंगे। श्रीश्री ठाकुर सर्वदा तुम सभी का मंगल करे। इति-

शुभानुध्यायी
विरजानन्द

।।१०।।

श्रीश्रीगुरुदेव
श्रीचरणभरोसा

THE VIVEKANANDA ASHRAMA
SHYAMLATAL
P.O. SUKHIDHAN, VIA TANAKPUR,
ALMORA U.P.

21.8.1942

श्रीमान नरेश,

तुम्हारा ८ तारीख का लिखा पत्र मिला। तुम कोलकाता अद्वैत आश्रम में कर्मी के रूप में जा रहे हो, यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई। मेरा विश्वास है कि कोलकाता में तुम्हारा शरीर भुवनेश्वर से अधिक स्वस्थ रहेगा और जपध्यान करने के लिए भी अधिक समय मिल सकेगा। बीच-बीच में मठ में भी आ सकोगे। श्रीश्रीठाकुर के पास प्रार्थना करता हूँ कि तुम निःस्वार्थभाव से अहंज्ञान त्याग कर उनका कार्य करते हुए चित्तशुद्धि और आनन्द-लाभ प्राप्त करो।

हजारों कार्यों की व्यस्तता रहने पर भी जपध्यान का अभ्यास छोड़ो नहीं। वो ही साधुजीवन का सम्बल और अवलम्बन। बेकार के काम और वार्तालापों में समय नष्ट मत करो।

मेरा शरीर आजकल कुछ ठीक चल रहा है। ज्वर और लीवर की समस्या कम हो गयी है-किन्तु हृदय की दुर्बलता जैसी थी वैसी ही है। जो भी हो चिन्ता का कोई कारण नहीं है।

मेरा स्नाशीर्वाद लो। आशा है कोलकाता पहुँच कर अब तक आश्रम के कर्म-दायित्वों का भार ग्रहण कर चुके होंगे। इति-

शुभानुध्यायी
विरजानन्द



।।११।।

श्रीश्रीदुर्गा
शरणम्।

VIVEKANANDA ASHRAMA
SHYAMLATAL
SUKHIDHANG P.O. (ALMORA) U.P.

'विजया'

प्रिय नरेश

तुम्हारा विजया का पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। तुम मेरा शुभ-विजया का सादर सम्भाषण और स्नेहाशीर्वाद जानो और अन्यान्य सभी लोगों को भी बताओ। मेरा शरीर अभी थोड़ा अच्छा है, किन्तु ज्वर नहीं छूट रहा है और दुर्बलता भी पहले जैसी ही है। श्रीश्रीठाकुर जैसे रखें, उसमें ही मगँल है। आशा है तुम सब बहुत ही अच्छे से होंगे।

श्रीश्रीठाकुर के श्रीपादपद्मों में तुम्हारी अचल प्रेमाभक्ति हो यही मेरी प्रार्थना।

शुभानुध्यायी
विरजानन्द